# चलता चल...

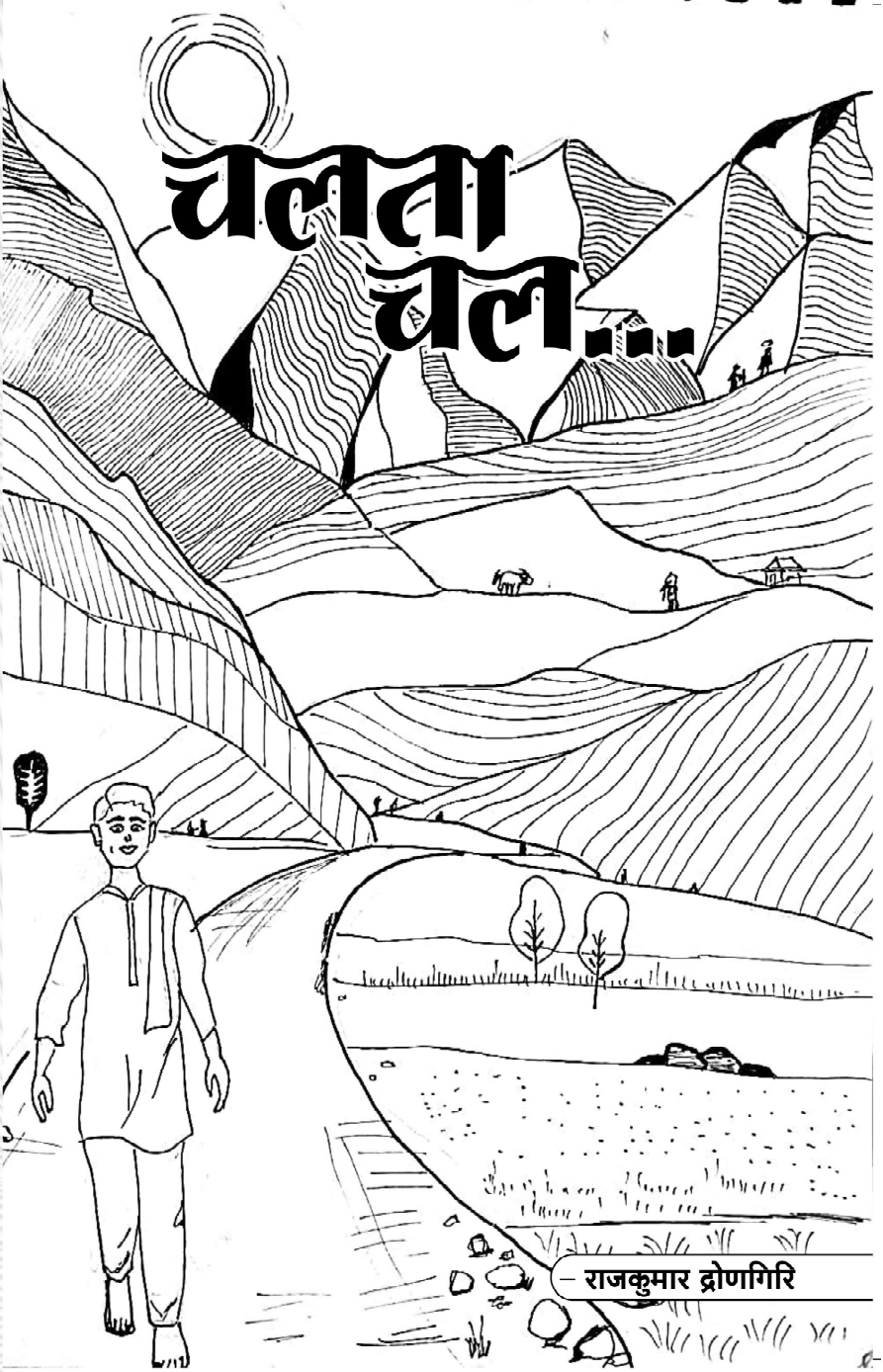

– राजकुमार द्रोणगिरि

Created by Universal Document Converter

## लेखक द्वारा लिखित प्रकाशित साहित्य

अनुपलब्ध

अनुपलब्ध

अनुपलब्ध

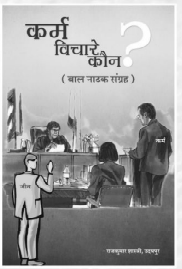


अनुपलब्ध

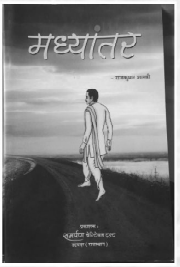


₹ 30/-

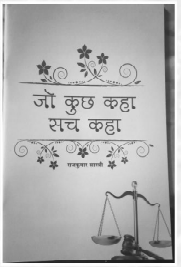


₹ 20/-

अनुपलब्ध

₹ 5/-

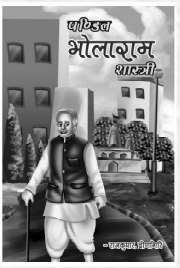


₹ 25/-

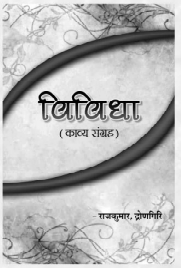


₹ 25/-

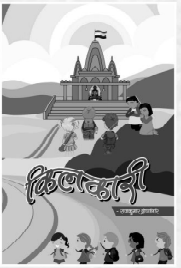


₹ 20/-

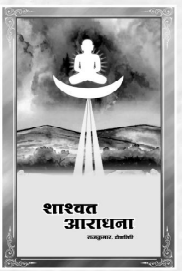


₹ 25/-

मुख्य पृष्ठ चित्रांकन : श्रीमती निष्ठा–अगम जैन, उदयपुर

Created by Universal Document Converter

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट का 38 वाँ पुष्प

# चलता चल

रचयिता

**राजकुमार शास्त्री**

प्रकाशक

समर्पण

18, आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर, उदयपुर (राज.)

मो. 91 9414103492

Created by Universal Document Converter

**प्रथम संस्करण** : 1000 प्रतियाँ
[भाद्र शुक्ल पंचमी उत्तम मार्दव दिवस,
दिनांक 20 सितंबर 2023]

**प्राप्ति स्थान** : **शाश्वतधाम, उदयपुर ( राज. ),**
मो. 91-9414103492
: **श्री दिनेश शास्त्री, जयपुर**
मो. 91-9928517346

**साहित्य प्रकाशन हेतु सहयोग राशि : 50/-**

**मुद्रक** : देशना कम्प्यूटर्स
82, पॉल्ट्री फार्म, आगरा रोड, जयपुर
मो. 9928517346

Created by Universal Document Converter

# प्रकाशकीय

'**समर्पण**' द्वारा आठ वर्ष की अल्पावधि व सीमित साधन होने पर भी आप सबके असीमित स्नेह से 37 पुष्पों की लगभग 65 हजार प्रतियाँ प्रकाशित कर समाज के समक्ष प्रस्तुत की जा चुकी हैं।

राजकुमार शास्त्री द्वारा लिखित प्रेरक/नीतिपरक/आध्यात्मिक कविताओं के संग्रह के रूप में यह 38वाँ पुष्प '**चलता चल**' स्वाध्याय हेतु प्रस्तुत है। कविताओं के नीचे रिक्त स्थान में लेखक की नई रचनायें प्रकाशित की गईं हैं, जो मननीय हैं। अभी तक हमारे द्वारा प्रकाशित सभी साहित्य को पाठकों ने हृदय से सराहा है। यह प्रसन्नता का विषय है कि हमें पुस्तक प्रकाशन के पूर्व ही अर्थ सहयोग प्राप्त हो जाता है। अत: बाद में हम '**जो चाहो ले जाओ, जो चाहो दे जाओ**' की भावना से पाठक को साहित्य उपलब्ध कराते हैं, इसमें जो राशि आती है, उसे अन्य प्रकाशन में आवश्यकतानुसार उपयोग करते हैं।

'**चलता चल**' पुस्तक सर्व सामान्य द्वारा पठनीय ही नहीं, स्वाध्याय से दूर रहने वाले सहृदय व्यक्तियों तक पहुँचाने योग्य भी है।

पुस्तक के सुन्दर मुद्रण के लिए श्री दिनेश शास्त्री (देशना कम्प्यूटर्स) जयपुर, अर्थ सहयोग हेतु अन्य साधर्मियों का भी आभार।

लेखन/मुद्रण में किसी भी प्रकार की त्रुटि हो तो कृपया हमें अवगत करायें, जिससे कि भविष्य में ध्यान रखा जा सके।

अब आपके हाथों में है - '**चलता चल**'।

निवेदक - **समर्पण परिवार**
मो. 9414103492

## सच ही कहा है...

हिन्दी साहित्य के प्रख्यात लेखक मुंशी प्रेमचन्द ने सच ही कहा है कि- 'लिखते तो वे लोग हैं, जिनके अन्दर कुछ दर्द है, अनुराग है, लगन है, विचार है। जिन्होंने धन और भोग-विलास को जीवन का लक्ष्य बना लिया, वे क्या लिखेंगे?'

**- अजित शास्त्री, अलवर**

Created by Universal Document Converter

# अंतर्मन

पिछले लगभग 10 वर्षों में तुकबंदी बनाने/करने की आदत सी बन गई है। अपने भावों को तुकांत व अतुकांत दोनों रूपों में सबके सामने प्रस्तुत करता रहा हूँ। यह तुकबंदी या जिन्हें हम कविता कह सकते हैं वे 'प्रेरणा' 'जो कुछ कहा सच कहा' और 'विविधा' के रूप में पहले प्रकाशित हो चुकी हैं। अब लगभग 5 वर्ष के अंतराल के बाद यह 'चलता चल' काव्य-संग्रह आपके हाथों में प्रेषित कर रहा हूँ।

स्वाध्याय करते एवं समाज के अनेकानेक दृश्यों को देखकर विविध प्रकार के भाव समय-समय पर उत्पन्न होते हैं, जिन्हें मैं पंक्तिबद्ध करके व्हाट्सएप के माध्यम से आप सबके समक्ष प्रस्तुत करता रहा हूँ। अनेक पाठक कुछ पंक्तियाँ हृदय को छू जाने वाली होने या व्यक्तिगत रूप से मुझसे स्नेह रखने के कारण उनको पसंद करके मेरा उत्साहवर्धन करते रहे हैं। उन गीत कविताओं को यथाशक्य भाई अजित शास्त्री अलवर द्वारा सदा ही परिमार्जित कर प्रोत्साहित भी किया जाता रहा है।

यह एक सामान्य मनोविज्ञान है कि लेखक जो कुछ भी लिखता है, वह उसे प्रकाशित करने की भी भावना रखता है, इसी के तहत इन कविताओं का संकलन जो कि विविध विषयों/भावों को समेटे हुए है, आपके समक्ष प्रस्तुत है। पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि वह उन भावों तक पहुँचने का प्रयास करें।

मैं अपने भावों को पहुँचाने में अधिकतर सहज ही अभिधा शक्ति का ही प्रयोग करता हूँ। लक्षणा-व्यंजना का प्रयोग न के बराबर है। भाषा भी सरल व सहज ही मेरे द्वारा लिखने में आती है, इसलिए सहजग्राह्य तो निश्चित ही होगी।

हमारे पाठकों का अधिकतर रुझान आध्यात्मिक है, अत: वे हर काव्य/लेख में अध्यात्म चाहते हैं, परन्तु जैसा कि पूर्व में भी कह चुका हूँ कि मैं सामाजिक/पारिवारिक/व्यक्तिगत परिदृश्य को देखकर भी कभी-कभी विचलित हो जाता हूँ और कोई कविता लिखने में आ जाती है। सच में इन कविताओं में कला का प्रदर्शन करना उद्देश्य न होकर अपने अंतर्मन की भावनाओं को शब्दों में पिरोने का यह प्रयास है। यह अलग बात है की कला पक्ष की दृष्टि से भी कोई ग़ज़ल की शैली में है तो कोई लंबा गीत है, कुछ कविताएँ हैं और पहली बार 'हाइकू' शैली में भी कुछ लिखा है। पाठक यदि भविष्य के लिए कुछ सुझाव दे सकते हैं तो सुझाव देकर अवश्य ही अपना वात्सल्य प्रकट करें।

**- राजकुमार शास्त्री**

20-09-2023

Created by Universal Document Converter

# समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट : एक परिचय

**देव-धर्म-गुरु के चरणों में, तन-मन-धन सब अर्पण।**
**आतमहित व तत्त्वज्ञान को, है सर्वस्व समर्पण।।**

**ट्रस्ट का नाम** - समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट | **स्थापना तिथि** - 20 सितम्बर 2014

## ट्रस्ट मण्डल

**संरक्षक :** 1. श्री अजित जैन बड़ौदा, 2. श्री ताराचन्द जैन उदयपुर, 3. श्री प्रकाशचन्द छाबड़ा सूरत, 4. श्री ललितकुमार किकावत लूणदा।

**अध्यक्ष** - राजकुमार शास्त्री उदयपुर, **उपाध्यक्ष** - अजितकुमार शास्त्री अलवर, **कोषाध्यक्ष** - रमेशचन्द वालावत उदयपुर, **मंत्री** - डॉ. महेश जैन भोपाल, **सहमंत्री** - पीयूष शास्त्री जयपुर, **ट्रस्टी** - पण्डित अशोकुमार लुहाड़िया मंगलायतन, डॉ. ममता जैन उदयपुर, ऋषभकुमार शास्त्री छिन्दवाड़ा, रतनचन्द शास्त्री भोपाल, इंजी. सुनील जैन छतरपुर, गणतंत्र 'ओजस्वी' आगरा।

**ट्रस्ट की सामान्य रूपरेखा - उद्देश्य :** 1. तत्त्वज्ञान, अहिंसा, शाकाहार, सदाचार का प्रचार करना। 2. सामाजिक विकृतियों के विरुद्ध जागरुकता पैदा करना। 3. अनुपलब्ध, आवश्यक व नये लेखकों का श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित करना। 4. सर्वोपयोगी पत्रिका प्रकाशित करना। 5. शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में आवश्यक मार्गदर्शन, सहयोग एवं कार्य करना।

**गतिविधि - 1. साहित्य प्रकाशन** - अभी तक 37 पुस्तकों का प्रकाशन, **2. संस्कार सुधा** मासिक पत्रिका का प्रकाशन, **3. सुखायतन** - सुखार्थी साधर्मियों के लिए द्रोणगिरि में नि:शुल्क-सशुल्क आवास-भोजन की व्यवस्था। **4. 'प्रयास'** - जैन समाज के युवा वर्ग को धार्मिक संस्कारों के साथ प्रशासनिक/सी.ए./नीट/आई.आई.टी. इत्यादि की तैयारी करने हेतु व्यवस्था। **5. साधर्मी वात्सल्य योजना** - साधर्मियों से स्वैच्छिक सहयोग लेकर योग्य साधर्मियों को शिक्षा/चिकित्सा सहयोग पहुँचाना। **6. धरोहर** - नैतिक/धार्मिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार हेतु नई शिक्षा नीति के अनुसार धरोहर पुस्तकों का प्रकाशन।

Created by Universal Document Converter

## प्रस्तुत प्रकाशन में सहयोग करने वाले महानुभाव

| | |
|---|---|
| 1. श्री आलोक जैन, कानपुर | 5000/- |
| 2. श्रीमती अनिता-अजित जैन, बड़ोदरा | 3100/- |
| 3. श्री सुरेन्द्र नखाते एवं भरतेश नखाते, नागपुर | 2100/- |
| 4. रेनू जैन नहटौर (संरक्षिका-महावीर की पाठशाला) | 2100/- |
| 5. श्री राजेन्द्र दोशी, मुम्बई | 2100/- |
| 6. साधर्मी बहिन, बालोतरा | 2100/- |
| 7. श्री सुरेश अखावत, उदयपुर | 2100/- |
| 8. डॉ. ममता जैन, उदयपुर | 1100/- |
| 9. श्रीमती निष्ठा-विपाशा जैन | 1100/- |
| 10. श्रीमती मीना-अरविन्द जैन, घुवारा | 1100/- |
| 11. श्रीमती अर्चना-अजित जैन | 1100/- |
| 12. श्रीमती रेखा वालावत, उदयपुर | 1100/- |
| 13. गुप्तदान, उदयपुर | 1100/- |
| 14. श्री संदीप जैन, रतलाम | 1100/- |
| 15. श्रीमती नीलम मेहता, उदयपुर | 1000/- |
| 16. श्री विद्या-सागर जैन उदयपुर | 1000/- |
| 17. श्री नेमिचन्द चंपालाल भोरावत चेरीटेबल ट्रस्ट, उदयपुर | 1000/- |
| 18. गुप्तदान, सिकन्दराबाद | 1000/- |

गुरु दिनकर गुरु चंद्रमा गुरु दीपक गुरुदेव।
निज अरु पर के भेद को, प्रकट किया स्वयमेव।।1।।
बलिहारी गुरु आपकी नर से बनाया देव।
सुर पदवी शतबार दी, नहीं लगाई देर।।2।।
निजाधीन सुख सत्य है, उसमें कर संतोष।
पराधीन सुख सुख नहीं, मूढ ना उसमें तोष।।3।।

**- पाहुड़ दोहा पद्यानुवाद**

Created by Universal Document Converter

# चलता चल तू चलता चल

चलता चल तू चलता चल
धीरे चल पर चलता चल
मोक्षमार्ग पर चलता चल।।

पथ भटकाने वाले अनगिन
मुक्तिपंथ दिखलाते हैं जिन।।
वीतराग को नमता चल।।1।।

रंग रंगीले-छैल छबीले।
खट्टे-मीठे, नीले-पीले
ज्ञेय जान बस लखता चल।।2।।

भाव शुभाशुभ गोरे-कारे।
हैं समान पर लगते न्यारे।
हैं दुखदायक, तजता चल।।3।।

गुण-पर्यय के भी भेदों में
नहीं उलझना इन छेदों में।
शाश्वत-ध्रुव को लखता चल।।4।।

अरस-अरूपी तूँ ही ज्ञायक।
मुक्तिरमा का तूँ ही नायक।।
बस ज्ञायक में रमता चल।।5।।

Created by Universal Document Converter

मोह नाशकर समकित लेकर।
अविरति नाशो संयम धरकर।।
गुणस्थान यों चढ़ता चल।।6।।

निज अनुभव से मुक्ति पंथ हो।
निज थिरता से पद अरहंत हो।।
मुक्तिकंत बन, सजता चल।।7।।

*06-03-2021*

## कल हो न हो...

जिनवर के नित दर्शन कर लो
कल फिर शक्ति हो न हो।।

सदाचार मय जीवन जी लो
श्रावक कुल फिर हो न हो।।

दिन में ही तुम भोजन करना
कल फिर अवसर हो न हो।।

जिन वचनों को प्रेम से सुन लो
कल कर्णेन्द्रिय हो न हो।।

आतमहित में उद्यत हो लो,
सत्संगति कल हो न हो।।

तन-चेतन को भिन्न पिछानो
फिर जाने, मन हो न हो।।

*09/02/18*

Created by Universal Document Converter

# जाने क्या होने वाला ?

विकट भयानक वायु चल रही, जाने क्या होने वाला ?
प्रकृति कह रही दाल है काली, नहीं दाल में है काला।।

ग्रीष्म काल में वर्षा ऋतु है, वर्षा में न मिले पानी।
शीत ऋतु में कूलर चलते, याद आ रही है नानी।।
ऋतुओं का यह परिवर्तन क्यों ? जाने क्या होने वाला ?1।।

कहीं अकाल तो कहीं सुनामी, स्वाइन फ्लू अब कोरोना।
धर्म-जाति की मारधाड़ है, घर-घर चलता है रोना।।
कहीं नहीं विश्वास है दिखता, जाने क्या होने वाला ?2।।

हे मानव! निज दोष न देखे, दोष प्रकृति को देता है।
बीज नीम का बोकर कोई, कहीं आम फल लेता है ?
खुद ही आग लगाकर कहता, जाने क्या होने वाला ?3।।

चीरहरण कर माँ वसुधा को, तुमने बंजर कर डाला।
खोद-खोद कर भू के उर को, तुमने छलनी कर डाला।।
धरती कांपी किंचित् तो तुम चिल्लाए क्या होने वाला ?4।।

निर्मल नीर मलिन कर रोगों, को आमंत्रित कर डाला।
भूजल का कर-कर के दोहन, सर्वत्र प्रदूषण कर डाला।।
नर-पशु-पक्षी तृषित भटकते, अब कहते क्या होने वाला ?5।।

घर् घर् घर् कर यंत्र चल रहे, सबको बहरा कर डाला।
धुँआ-धूल फैली है चतुर्दिक, निर्मल नभ है अब काला।।
प्राणवायु जब मिल ना पाती, कहते क्या होने वाला ?6।।

Created by Universal Document Converter

जल-ध्वनि-वायु प्रदूषण करके, सारी वसुधा दुखित हुई।
तन-मन सबके कलुषित हैं, वह मानवता अब कहाँ गई?
भाई-भाई को मार रहा है, जाने क्या होने वाला?7।।

*10/05/2020*

# लक्षण-लक्ष्य

पुष्प सुरभित, नीर शीतल अरु लवण में क्षार है।
शर्करा है मिष्ट एवं कंटकों में धार है।।

अग्नि में है उष्णता ज्यों, नित्य ही निजभाव से।
त्यों आत्मा में ज्ञान-सुख, रहते सदैव स्वभाव से।।

आत्मा में ज्ञान-सुख आता न जाता अन्य से।
द्रव्य-गुण न भिन्न रहते, सदा रहते अनन्य से।।

लक्षण सही जाने बिना, न लक्ष्य की पहचान हो।
लक्ष्य-लक्षण एक ही आधार रहते ज्ञान हो।।

धिक्कार है उस ज्ञान को, जो ज्ञानी को जाने नहीं।
जानता है ज्ञान से; 'ज्ञायक' हूँ यह माने नहीं।।

ज्ञान जाने ज्ञानी को, 'सत् ज्ञान' कहलाता तभी।
ज्ञान लक्षण से ही बंधु! जान लो निज को अभी।।

*12/12/19*

Created by Universal Document Converter

# आज समाज में ये क्या हो रहा ?

(तर्ज - आज के इस इंसान को ये क्या हो गया)

आज समाज में ये क्या हो रहा ?
सदाचार-वात्सल्य कहाँ पर खो गया ?

मन में मायाचार यहाँ पर
शब्दों के असि वार यहाँ पर
दिखलाने का प्यार यहाँ है
रिश्वत ही उपहार यहाँ है
न निश्चय-व्यवहार है दिखता
धर्म तो अब व्यापार है लगता
अरे ! सरलता धर्म कहाँ पर खो गया ?
सदाचार-वात्सल्य कहाँ पर खो गया ?1।।

रात्रि-भोजन घर-घर होता
जमीकंद का भोजन होता
होटल में सब शान से खाते
मद्यपान से ना शर्माते
खान-पान परिधान में हिंसा
साज-शृंगार में भी है हिंसा
धर्म अहिंसा छुप कर बैठा रो रहा,
सदाचार-वात्सल्य कहाँ पर खो गया ?2।।

'वीतरागता' मात्र हैं लिखते
राग भाव में धर्म समझते

Created by Universal Document Converter

सुख-दुख कर्ता प्रभु को माने
वीतराग प्रभु को ना पहचाने
तत्वज्ञान को नहीं समझते
'मनमानी' जिनवाणी हैं कहते
देखो! 'प्रवचन' भी अब 'धंधा' हो गया
सदाचार-वात्सल्य कहाँ पर खो गया ?3।।

दो सुनकर के चार सुनाते
शब्दों के हैं तीर चलाते
गिरते को हैं और गिराते
अपने अवगुण सभी छुपाते
केवल ईर्ष्या भाव यहाँ है
धन पद का ही चाव यहाँ है
तन-धन-पद में 'निज ज्ञायक' तो खो गया
सदाचार-वात्सल्य कहाँ पर खो गया ?4।।

नाम लिखाने दान हैं देते
पद पाकर मालिक बन जाते
धर्म प्रचार का नाम है देते
बस अपना ही यश फैलाते
निर्माल्य का भक्षण करते
पापों से जो कभी ना डरते
निर्वांछक का भाव कहीं पर खो गया ?
सदाचार-वात्सल्य कहाँ पर खो गया ?5

Created by Universal Document Converter

श्रावक-मुनि आचार शिथिल है,
तन उज्ज्वल अरु चित्त कुटिल है,
निज-दोषों को ना स्वीकारें
जो बतलाएँ उसको दुत्कारें,
कोई केवल चर्चा में रत,
कोई तत्त्वज्ञान से विरहित
'आत्मधर्म का मर्म' कहीं पर खो गया
सदाचार-वात्सल्य कहाँ पर खो गया ?6।।

*02-10-2020*

# यह है मेरा राजभवन

समकित नींव भरी है इसकी, नहीं हिलाये यह हिलती।
सन्मति भित्ति महा मनोहर, कहीं और जो न मिलती।।
सम्यक्चारित का आच्छादन, भवन हुआ है मन-भावन।।1।।

क्षमा-मार्दव-आर्जव आदि, पुष्प खिले जहँ उपवन में।
समता-शुचिता और सरलता, महक रही है चहुँ दिशि में।।
प्रभुता-विभुता छाया देते, लगता हर क्षण है सावन।।2।।

गुण अनन्त का स्वामी प्रियतम, शक्ति-धर्म अनंत बिखरे।
पर्यायें जन्में अरु लय हों, प्रियतम न जन्मे न कभी मरे।।
ज्ञाता-दृष्टा मेरा प्रियतम, सदा रहे वह 'राजभवन'।।3।।

*28-01-2022*

Created by Universal Document Converter

# निरपेक्ष

काम किए जा सोच समझ कर,
जो होवे निज पर को हितकर।।

फूल मिले या शूल मिले।
मान मिले अपमान मिले।
तू ना हटना पर से डरकर।।1।।

साथ देने न हाथ बढ़ाते।
गिरते को सब और गिराते।
रहना इनसे तू नित बचकर।।2।।

यश पाने की ना हो आशा।
असफलता में नहीं निराशा।
करते रहना उद्यम डटकर।।3।।

नदियां बहतीं, वृक्ष हैं फलते।
रवि-शशि भी हैं नभ में उगते।
स्वार्थ नहीं कुछ, बस परहित कर।।4।।

उदर भरण तो हैं श्वान भी करते।
मनुज वही जो परहित रहते।
निज हित हेतु ही परहित कर।।5।।

परहित तो हो मात्र बहाना।
बुरे भाव से खुद को बचाना।
परहित संग तू निजहित भी कर।।6।।

Created by Universal Document Converter

सत्यपंथ पर जो हैं चलते।
पथ में यश-पद सुमन हैं खिलते।।
विचलित न हो यश-पद लखकर।।7।।

*17/12/19*

## नहीं सोचा तो, सोचो

ऐ 'सोचक!'
तू सोचता बहुत है;

हे भगवान्! अचानक ही
यदि वे चले गए तो!!
मेरा क्या होगा??

दुर्भाग्य से यदि
मैं चला गया तो -
परिवार-देश-समाज-संस्था का
क्या होगा?

पर यह कभी नहीं सोचता कि -
परिवार-देश-समाज व संस्था
व्यापार-शरीर आदि की व्यवस्था
सोचते-सोचते ही यदि
मैं चला गया तो
मेरा क्या होगा???

*20/04/2021*

Created by Universal Document Converter

# आत्मार्थी की अन्तर्भावना

अब मैं बहुत थक गया हूँ,
इसीलिए चलते-चलते रुक गया हूँ।

थक गया हूँ
स्वार्थी दुनिया में जीते-जीते,
अनंत दुखों के कडुवे आँसू पीते-पीते।
इस दुनिया में
हँसाने वालों ने ही रुलाया है,
इस स्वार्थी दुनिया ने,
जिताने के नाम पर हराया है।
मित्रों ने जगाने के नाम पर
मोह नींद में सुलाया है,
मैं समझ ना पाया अब तक
कौन अपना? कौन पराया है?
भाई-बहन, पति-पत्नी आदि के रिश्ते निभाते
घर, दुकान, मन्दिर, तीरथ आते-जाते
खाते, कमाते, खिलाते-पिलाते
एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक शरीरों को धारण करते
रूठों को मनाते,
परायों को अपना बनाते
पाप करके धन कमाते
और

Created by Universal Document Converter

धन लगाकर पुण्य कमाते
अनाम आत्मा के नाम रख,
बदनाम करते
धर्म के नाम पर अधर्म करते
पक गया हूँ/थक गया हूँ।

अब जन्म-मरण के
घोर कष्ट सह नहीं सकता,
निजानन्द रसपान किये बिन
अब रह नहीं सकता,
क्योंकि अपने से दूर रहते,
कष्ट सहते
थक गया हूँ, थक गया हूँ
बस इसीलिए
राग-द्वेष, पुण्य-पाप की
अंधी दौड़ से रुक गया हूँ।

*5/1/15*

## हाइकू

न हो अपेक्षा
न किसी की उपेक्षा
बड़ी परीक्षा
---
बोलो अर्हम
मानो सदा मन में
सदा सोऽहम

न ही लायक
न ही मैं नालायक
बस ज्ञायक
---
मैं हूँ ज्ञायक
मुक्तिपुरी नायक
सुखदायक।।

Created by Universal Document Converter

# मैं जा रहा हूँ

❁

मैं
बहुत रह लिया
इस स्वार्थी दुनिया में
अब मैं जाने की तैयारी में हूँ
जाऊँगा! मैं जल्दी ही जाऊँगा
न लौटकर फिर आऊँगा
मुझसे जो, जैसा बना
किया/दिया
पर अब मैं और नहीं रहना चाहता
आपके साथ।
आप बुलाना भी नहीं
पर चाहता हूँ
भुलाना भी नहीं;
परन्तु रोकने का निरर्थक प्रयास भी नहीं करना
क्योंकि मैं अब रुकूँगा नहीं
मेरी शुभकामनायें हैं
कोरोना का रोना मेरे सामने तो न मिटा
पर चाहता हूँ
मेरे जाते ही
कोरोना रोते हुए
सबकी जिन्दगी से जाये
और फिर लौटकर कभी न आये।

Created by Universal Document Converter

आप सभी का जीवन मंगलमय हो
सुखद हो
विश्व में सर्वत्र शान्ति हो
न कोई भ्रान्ति हो
भाषा/धर्म/जाति के भेद न हों
मतभेद हों; पर मनभेद न हों

तो मित्रो!
अब मैं चलता हूँ
आपका जीवन अशेष है
मेरा तो गिनती का शेष है
लगा रहा हूँ एक ही नारा
मैं न किसी का, कोई न हमारा
फिर भी दिल से दे रहा शुभाशीष
मेरा नाम है दो हजार बीस।

*21-12-2020*

## हाइकू

मैं तो हूँ एक
परिपूर्ण प्रत्येक
माने जो नेक।।
---
बनता कर्ता
भूलकर ज्ञायक
जग भ्रमता।।

जग सपना
कोई नहीं अपना
मोह तजना।।
---
आस्रव भाव
अशरण दुखद
कर अभाव।।

Created by Universal Document Converter

# आओ चलो उस पार चलें

आओ चलो उस पार चलें हम।
निज आतम के द्वार चलें हम।।

तन-मन-धन का शोर नहीं है।
जहाँ किसी का जोर नहीं है।।
निर्भय अरु निर्भार रहें हम।।1।।

रंग-राग से भिन्न सदा जो।
दर्श-ज्ञान-सुख-वीर्यमयी वो।।
चेतन रस का स्वाद चखें हम।।2।।

अरस-अरूपी भगवन मेरा।
उसमें ही अब करूँ बसेरा।।
छोड़ो पर की आस चलें हम।।3।।

जब तक निज में न रम जाऊँ।
सबको निज घर पथ बतलाऊँ।।
आओ सुख की राह चलें हम।।4।।

होय विरोधी या अनुयायी।
क्षणिका लख न होऊँ कषायी।।
पर्यायों से पार लखें हम।।5।।

*08/03/18*

Created by Universal Document Converter

# प्रार्थना

हे प्रभु! इस विश्व में सुख शान्ति का आवास हो।
न रोग हो, न शोक हो, न भूख हो न प्यास हो।।1।।

मृत्यु का अब हो न तांडव, सर्वत्र ही मधुमास हो।
माता-पिता गमगीन न हों, न युगल कोई उदास हो।।2।।

ज्ञान मन्दिर सब खुलें, हो ज्ञान की आराधना।
बाल-बाला मुदित मन से, करें लक्ष्य की साधना।।3।।

सिर झुके न स्वजन सम्मुख, पुलकित वदन सब रह सकें।
'चिंता करो न कोई अब, हम साथ हैं' यह कह सकें।।4।।

मित्रगण, परिजन औ पुरजन, फिर गले से लग सकें।
हाथ में ले हाथ प्रिय का, साथ में अब चल सकें।।5।।

खेत में हरियाली चादर, कृषक में उल्लास हो।
बाजार में हो चहलकदमी, धनधान्य की बरसात हो।।6।।

दूरियाँ अब दूर हों प्रभु! मनुज मन नजदीक हों।
समता-समर्पण-समन्वय से, देवत्व के ही प्रतीक हों।।7।।

भय भगे उत्साह जागे, नवसृजन में सब लगें।
जो हुआ सो हुआ हे प्रभु! अब कष्ट सब के सब भगें।।8।।

*13-06-2021*

Created by Universal Document Converter

# चुप रहो

मित्र कहते चुप रहो तुम, तुम अधिक क्यों बोलते हो?
मौन साधे सब हैं बैठे, तुम ही मुँह क्यों खोलते हो?

स्वार्थ का छाया अँधेरा, मनुजता ना दीखती।
'वसुधा ही परिवार है' की भावना ना दीखती।।
भेदभावों के जगत में, 'समतुला' क्यों तोलते हो?

न्याय पथ चल सुखी होते, 'थे' लोग ऐसा बोलते।
अन्याय पथ चल सुखी होते, आज यह सब मानते।।
न्याय-नीति 'ग्रन्थ' में हैं, तुम उन्हें क्यों खोलते हो?

पद-प्रतिष्ठा प्राप्त कर जग, अपने में ही मस्त है।
धन-पद मिले बस परिजनों को, चाह से संत्रस्त है।।
गृहकार्य तज तब अन्य के हित, व्यर्थ ही क्यों दौड़ते हो?

जिसको पिपासा उसको ही, जल दान करना योग्य है।
जिसको 'जिज्ञासा' उसे ही, 'ज्ञान' देना योग्य है।।
स्वयं को जो 'विज्ञ' माने, क्यों ज्ञान उनको बाँटते हो?

पारमार्थिक कार्य भी अब, पारिवारिक हो रहे हैं।
निःस्वार्थता के शब्द अब, स्वारथ ध्वनि में खो रहे हैं।।
समता-सरलता-समर्पण के, बीज तुम क्यों बो रहे हो?

अपराध कर बैठे यहाँ सब, न्याय होगा अब कहाँ पर?
अवगुणों को ढँक रहे हैं, गुणीजन को दोष देकर।।
घनघोर तममय निशा से, क्यों उजाला माँगते हो?

*18/12/19*

Created by Universal Document Converter

# अर्द्धसत्य

रात हो या फिर होय सबेरा।
जग में अंधा-धुंध अंधेरा।।

शान्तिनाथ ही शान्ति देते।
मुनिसुव्रत संकट हर लेते।।
पार्श्वनाथ हैं रक्षा करते।
महावीर झोली भर देते।।
कोई बीस तो कोई तेरा।।

मनमर्जी के गुरु मानते।
अपनी-अपनी सभी तानते।।
वक्ता-श्रोता बंटे हुए हैं।
सब कहते वे छंटे हुए हैं।।
अंधों को न दिखे अंधेरा।।

धर्म बिक रहा है मंचों पर।
है विश्वास मात्र चमचों पर।।
अन्यायी ही न्याय कर रहे।
कमा पाप से, दान कर रहे।।
पता न चलता कौन लुटेरा?

समझाने की होड़ मची है।
जो कहते बस वही सही है।।
'कंचन' में ही सब गुण रहते।
धन-पद पाकर 'निजहित' करते।।
पता नहीं कब होय सबेरा।।

*19-07-2021*

Created by Universal Document Converter

# मैं

❁

**मैं**
कुछ ऐसा लिखूँगा
जैसा किसी ने
अब तक लिखा न हो

**मैं**
अब कुछ ऐसा कहूँगा
जैसा जमाने में किसी ने
कहा न हो

**मैं**
कुछ ऐसा करूँगा
जैसा किसी ने
अब तक किया न हो

**मैं**
दान करूँगा इतना/ऐसा
जितना/जैसा
अब तक किसी ने दिया न हो।

**ऐसा**
कुछ मूर्ख
रात-दिन सोचते हैं।

*13/10/17*

Created by Universal Document Converter

# मित्रो! तब कुछ बात बने

मित्रो! तब कुछ बात बने

धन-पद-यश को पाकर चेतन, मान शिखर चढ़ बैठे हो।
मान छोड़, देखो समान, मित्रो! तब कुछ बात बने।।

निज घर भरने लगे रात-दिन, सत्यासत्य नहीं दिखता।
परहित करने माल लुटाओ, मित्रो! तब कुछ बात बने।।

अरे! रात-दिन जागा करते, जड़ वैभव को पाने को।
जड़ तज तुम, चेतन हित जागो, मित्रो! तब कुछ बात बने।।

परज्ञेयों से लाभ मानकर, उन्हें जानने भाग रहे।
निज ज्ञायक को ज्ञेय बनाओ, मित्रो! तब कुछ बात बने।।

पंचेन्द्रिय के विषय-भोग में, चेतन आनन्द मान रहा।
ज्ञानानन्द चखोगे जब तुम, मित्रो! तब कुछ बात बने।।

परिजन-पुरजन के हित बंधु! अर्पण सब कुछ कीना है।
निज हित हेतु करो समर्पण, मित्रो! तब कुछ बात बने।।

*08-01-2022*

हो निवृत्त इंद्रिय विषय, करता आत्म ध्यान।
सुर पति को वह सुख नहीं, समझो हे मतिमान।।4।।

Created by Universal Document Converter

# सावधान!!!

❁

'आगे बढ़ो, गिरि पर चढ़ो', कहकर बढ़ायेंगे सभी।
'हम तुम्हारे साथ हैं' कह, साथ न आते कभी।।

मित्र! पौरुष देख अपना, कदम आगे को बढ़ाना।
जीत में सब साथ होंगे, हार में पीछे जमा़ना।।

साथ देने का वचन दे, लोग मुँह को फेरते हैं।
हो स्वयं जो शक्तिशाली, उस तरफ सब हेरते हैं।।

जन्म 'औ' मृत्यु अकेले, संग की फिर चाह क्यों है?
लक्ष्य निश्चित, चल अकेला, अन्य की परवाह क्यों है?

जब अकेले जन्म लीना, तब बजी थीं थालियाँ।
अब अकेले ही चलो तुम, सब बजायें तालियाँ।।

प्रवाह के विपरीत चलना, सच में आसां है नहीं।
पर लीक को ही पीटना तो, बुद्धिमत्ता है नहीं।।

सब दिखावा और देखादेखी ही हैं कर रहे।
परमार्थ से हैं दूर तब, कौन है जो सच कहे?

जड़ भवन की भव्यता में, भावना अब मर रही है।
पद-प्रतिष्ठा-यश को पाने, मानो जगती जल रही है।।

चेतन जगो, कुछ तो करो, अब ज्ञान का दीपक जलाओ।
तजकर 'प्रदर्शन संस्कृति', सर्वज्ञ 'शासन' को बचाओ।।

*20/09/19*

Created by Universal Document Converter

# मतलब का संसार

मतलब का संसार है प्यारे, मतलब का संसार।
मत कर इससे प्यार रे बंधु, मत कर इससे प्यार।।

तारा जिसे आँख का समझा, तन-धन जिस पर वार।
आँख फोड़ता वही हमारी, लूटे यश-व्यापार।।1।।

धन लाकर के जब तक देते, परिजन करते प्यार।
तन बल-धन-बल कम पड़ जाए, सभी कहें बेकार।।2।।

मित्र सभी तब तक खुश रहते, देते रहो उधार।
जब धन अपना वापिस मांगा, झूठा कहते यार।।3।।

धर्म छोड़कर करो जन सेवा, सब कहते होशियार।
काम निकलने पर जग बोले, इनका क्या अधिकार ?4।।

मोह नींद खुलने पर लागे, भिन्न मित्र-परिवार।
जिनवाणी माँ मुझसे कहती, तू बस जाननहार।।5।।

*31/08/21*

## हाइकू

मिला है मन
हे मनुष्य तुम
करो मनन

न संस्कार
परिग्रह अपार
मिले संसार।।

Created by Universal Document Converter

# जमाना

❁

कर्मोदय से कभी भरता व खाली होता है खज़ाना।
जिनकी छाया को भी तरसते थे, उनसे ही डरने लगा ज़माना।।

जिनके मिलने से शुभ शकुन का होता था अहसास।
आज उनके ही मिलने पर मुँह फेर, हँसता है ज़माना।।

जिसने उगाया था बगीचा, सबकी खुशी के लिये।
बेदखल उसको ही, करता है ये बेदर्द ज़माना।।

सुबह होंगे राजा राम, थी सबको खुशी व इंतजार।
शाम समय वन जाते, देख रहा था ये ज़माना।।

सती सीता, अंजना का था नहीं कुछ दोष?
कर्मोदय से भटकीं, बस देखता रहा खुदगर्ज ज़माना।।

प्रतिपल बदलते उदय का विश्वास न कर।
है आज तेरा, कल और का होगा ये जमाना।।

पल-पल बदले मनस्थिति, लगा है आना-जाना।
मैं त्रिकाल ज्ञायक मुझको क्या बदले ये कमजोर जमाना।।

*14/12/15*

विषयों का सुख भोगते, पर नहीं जो आसक्त।
जिनवर कहते शीघ्र वे, करें शाश्वत सुख प्राप्त।।5।।

Created by Universal Document Converter

# धन्य हैं कलि में जिनवच ग्रन्थ

ग्रीष्म काल में सूखी नदियाँ, पशु-पक्षी अकुलाते हैं।
दौड़-भागकर चहुँ दिशि जाते, शीतल जल जब पाते हैं।।
जल बिन भगवन् अब क्या होगा? सोच-सोच घबराते हैं।
टुकुर-टुकुर तकते नभ-भू को, प्राण कंठ में आते हैं।।

करुणा पूरित द्रवित हृदय जन नीर-सकोरे भरते हैं।
कलरव करते खगगण आते, शीतल जल जब पीते हैं।।
प्रमुदित होकर नर्तन करते, धन्यवाद वे देते हैं।
जलरूपी जीवन को पाकर, जीवन धन्य समझते हैं।।

त्यों तीर्थंकर विरह हुआ जब, जिन वचनामृत नहीं मिले।
भक्तजनों का जीवन दु:खमय, कैसे सुखमय पुष्प खिले?
मुक्ति पंथ अब कौन दिखावे? दु:खमय तृषा बुझाए कौन?
कैसे निज घर में आएं? पथ दर्शक तो बैठे मौन।।

भव्य जनों की पीर मिटाने, सुखमय मुक्ति पथ दिखलाने।
आचार्यों ने करुणा करके, ग्रंथ रचे गुण-दोष बताने।।
निर्ग्रंथों के ग्रंथों को लख, हुए सग्रंथ स्वयं निर्ग्रन्थ।
धन्य जिनेश्वर धन्य मुनीश्वर, धन्य है कलि में जिनवच ग्रंथ।।

*22.8.2022*

इंद्रिय सुख ना भोगते, उर में विषय अपार।
तंदुल मत्स्य समान ही, खोले नरक का द्वार।।6।।

Created by Universal Document Converter

# आलोचना

दूसरों के दोष कहना, न 'आलोचना' का अर्थ है।
गुण-दोष को जाने बिना, आलोचना बस व्यर्थ है।।

आलोचना वे जन करें, जो नहीं कुछ पर हित करें।
स्व-पर हित जो कुछ करें, आलोचना से कब डरें।।

धन्य आलोचक सभी, निज अहित कर परहित करें।
औषधि सम कटुवचन कह, दोष ज्वर को परिहरें।।

सत्य आलोचक मिलें तो, नियम से सद्भाग्य है।
पर मैं भी आलोचक बनूँ तो यह मेरा दुर्भाग्य है।।

पर दोष दर्शन अरु कथन, नहीं जीव को हितकार है।
निज दोष दर्शन अरु श्रवण कर, तजना ही सुखकार है।।

हम स्वयं के दोष देखें, निर्दोष होने के लिए।
पर के भी यदि दोष देखें, निर्दोष करने के लिए।।

मैं तजूँ निज दोष को, करके क्षमा की याचना।
मम दोष कह निर्मल करो, है यही सब से प्रार्थना।।

*04/10/19*

राग-द्वेषमय भाव का, जग करता व्यापार।
मोक्ष हेतु निज आत्म का, करता नहीं विचार।।7।।

Created by Universal Document Converter

# चला जा रहा हूँ

चला जा रहा हूँ, चला जा रहा हूँ।
पता ही नहीं पर कहाँ जा रहा हूँ?

धन पद को पाने अहर्निश में दौड़ा।
साधन मिलाने बहुत जोड़ा-तोड़ा।।
शांति मिली न, समय खो रहा हूँ।।1।।

परिजन मिलेंगे तो, शांति मिलेगी।
मुरझाई कली जो फिर से खिलेगी।।
इसी आस में मैं, मरे जा रहा हूँ।।2।।

करूँ देव पूजा या करूँ शास्त्र अध्ययन।
व्रत धारकर मैं करूँ तीर्थ वंदन।।
पर लगता है, सुख से परे जा रहा हूँ।।3।।

तन-धन अरु परिजन, नहीं सुख के कारण।
रागादि विरहित, ज्ञायक भव तारण।।
जो है सुख सागर, अब वहाँ जा रहा हूँ।।4।।

*13-10-22*

विषय कषायों से सहित, कोलाहल है व्याप्त।
मन जब निश्चल शुद्ध हो, परम सौख्य हो प्राप्त।।8।।

जब तक बोधि ना प्राप्त हो, सुत-दारा से प्यार।
चौरासी लख योनि में, सहता दु:ख अपार।।9।।

Created by Universal Document Converter

# आओ ज्ञान का दीप जलाएँ

❀

जड़ दीपक प्रज्वलित किए बहु, आओ ज्ञान का दीप जलाएँ।
क्रोध-अहं-छल-लोभ-मोहमय, अंतर्तम को दूर भगाएँ।।

तन पोषण हित धन अरु जीवन, जग जन करते सदा समर्पित।
पुण्योदय से नरतन पाया, करे अज्ञ भोगों में अर्पित।।
विषय-भोग में फँसे हुए को, नरभव का हम मूल्य बताएँ।।1।।

न्याय-नीति से दूर हो रहे, बढ़ता जाता है निशि भोजन।
जिन दर्शन न मन को भाता, करें कुदेवों की नित पूजन।।
न्याय-नीति अरु देव-गुरु का सम्यक् रूप दिखाएँ।।2।।

साधर्मी वात्सल्य घट रहा, होता है सर्वत्र प्रदर्शन।
'समारोह संस्कृति' है चहुँ दिशि, दिखता कहीं न 'अर्हत् दर्शन'।।
वीतराग-सर्वज्ञ प्रभु के, 'अकर्तृत्व' को हम सिखलाएँ।।3।।

पंथवाद अरु सन्तवाद में, व्यर्थ ही युवजन को भरमाते।
रागभाव में धर्म बताकर, वीतरागता से भटकाते।।
रागभाव में धर्म नहीं है, आओ मिलकर हम समझायें।।4।।

निश्चय को 'ही' सत्य मानकर, पापभाव से न घबराते।
शुभभावों में धर्म मानकर, सत्यपंथ को जन न पाते।।
अनेकान्तमय वस्तु व्यवस्था, स्याद्वाद से हम समझाएँ।।5।।

*28-10-22*

Created by Universal Document Converter

# भूख

तन-मन-धन की भूख
यश-पद पाने की भूख
नाम और मान की भूख
'और कुछ' पाने की भूख
खाने-खिलाने की भूख
सुनने-सुनाने की भूख
देखने-दिखाने की भूख
ये भूख विकट-विकराल
इसके कारण बिगड़ी है चाल
जो सच में है मालामाल
वह ही बना फिरता कंगाल
ये भूख सबको रुलाती है
न जाने कहाँ-कहाँ भ्रमाती है
'शर्म-हया' को भी खा जाती है
राजा को 'भिखारी' बनाती है
हे प्रभो! सादर है मेरी प्रार्थना
करबद्ध हो करता हूँ याचना
मुझे मेरा वैभव दिखा दो
अमृत पिला सब भूख मिटा दो
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्
का करता हूँ चरणों में अर्पणम्।।

*27-11-22*

Created by Universal Document Converter

# जागो जैन जवान

जागो जैन जवान,
जागो जैन जवान।
निज संस्कृति पहचान
जागो जैन जवान।।

वीतराग-सर्वज्ञ-हितंकर
ही होते चौबिस तीर्थंकर
इनमें भेद नहीं है हितकर।
सब हैं एक समान।।1।।

नग्न दिगंबर मुनिवर होते।
विषय कषायों को वे धोते।
परिग्रह तज निज में ही सोते
ऐसे मुनिवर जान।।2।।

वस्तु स्वभाव को धर्म कहा है
वीतराग ही धर्म महा है
धर्म अहिंसा परम कहा है
यह जिनधर्म महान।।3।।

यत्नाचार से करो प्रवृत्ति
न्याय-नीतिमय हो सब वृत्ति
पापाचार से करो निवृत्ति
दया धर्म पहचान।।4।।

Created by Universal Document Converter

पंथवाद से दूर रहें हम।
जातिवाद को गौण करें हम।।
आतमहित को मुख्य करें हम।
हो स्वाध्याय प्रधान।।5।।

दिन में भोजन, प्रतिदिन दर्शन
पिज्जा-बर्गर न स्पर्शन
रात्रि-भोजन का न चिंतन
श्रावक व्रत को जान।।6।।

'प्री वैंडिंग' है महा विकृति
'केक काटना' न निज संस्कृति
प्यार 'विधर्मी' संग नशे संस्कृति
जैनाचार महान।।7।।

*17-02-2022*

गृह-धन-सुत- दारा- सुता, उनको निज मत मान।
यह सब कर्माधीन हैं, आगम को पहचान।।10।।

दुख में सुख की कल्पना, मोह उदय से होय।
सुख को तू दुख मानता, शिव सुख कहाँ से होय।।11।।

चिंता करता रात-दिन, मम धन अरु परिवार।
अब आतमचिंतन करो, पाओ सौख्य अपार।।12।।

यह गृहवास अनित्य अरु, पापों का जहँ वास।
दुखमय अरु परतंत्र है, है यमराज का पाश।।13।।

तन-मन-धन सब कर्म कृत, तुष सम नीरस जान।
गृह परिजन का मोह तज, शिव पथ चल मतिमान।।14।।

Created by Universal Document Converter

# सपना है जो लगता अपना

❀

चंचल चित् यह नित नूतन ही, मधुरिम सपने देखा करता।
सपने को साकार बनाने, मनुज अहर्निश जागा करता।।

पत्नी सुन्दर और कमाऊ, सर्व विषय की जाननहारी।
पुत्र-पुत्रियाँ सेवाभावी, पुत्रवधू हो आज्ञाकारी।।
पोते-पोती की किलकारी में मोहित मन खोया रहता।।1।।

नगर देश में नाम कमाऊँ, गाड़ी-बंगले खूब सजाऊँ।
रह समाज में सदा अग्रणी, नेता सबका मैं कहलाऊँ।।
कल्पित सपने पूरे करने, चहुँ दिशि में जग भागा फिरता।।2।।

दादा-नाना, समधी-समधन, प्यार करें सब रिश्तेदार।
आना-जाना, खाना-पीना और मिलें सुन्दर उपहार।।
स्वार्थ पूर्ण सब रिश्ते नाते, बिन समझे मन मचला करता।।3।।

सपने तो सपने होते हैं, कभी ना जो अपने होते हैं।
मोह जनित जब सपने टूटें, छुप-छुपकर मोही रोते हैं।।
सपने टूटे मैं क्यों रोऊँ?, मोही ना यह समझा करता।।4।।

मोह नींद से जागो चेतन, नाम-धाम यह सब ही सपना।
भेदज्ञान के ही अभाव में, सारा जग लगता अपना।।
पर निरपेक्ष सदा जो रहता, निर्भय वह घूमा करता।।5।।

*25-03-22*

मोह नशे अरु मन मरे, ध्रुव का करे जो ध्यान।
श्वास निःश्वास भी नष्ट हो, पाता केवलज्ञान।।15।।

Created by Universal Document Converter

# शर्तों पर धर्म नहीं होता

आज का युवावर्ग!
घर पर कोई काम न हो तो
मंदिर आ सकते हैं,
व्यापार न बिगड़े तो
स्वाध्याय में आ सकते हैं,
नाम व सम्मान हो तो
दान दे सकते हैं,
पुण्य बंध व लौकिक लाभ हो तो
अभिषेक/पूजन कर सकते हैं
संतान को लौकिक शिक्षा में 95प्रतिशत अंक आ सकें तो
पाठशाला या संस्थानों में पढ़ा सकते हैं
पद/यश मिले तो
समाज सेवा कर सकते हैं
घर/परिवार न छूटे तो
मोक्षमार्ग में चल सकते हैं
पंच इन्द्रिय का पोषण हो तो
अभक्ष्य त्याग कर सकते हैं
सारा देश मान जाये तो
महावीर के सिद्धान्त मान सकते हैं
बिना कुछ समझे, त्याग किये, लौकिक आनंद छोड़े
धर्म होता हो तो
धर्म कर सकते हैं!!

Created by Universal Document Converter

नहीं तो मंदिर व महावीर से नाता तोड़ सकते हैं
मित्रो!
धर्म-न्याय-नीति में शर्त नहीं होती
आत्महित करने वाले की
पर से कोई अपेक्षा नहीं होती।।
शर्तों के साथ व्यापार किया जा सकता है
धर्म नहीं।
शर्तों पर पद-प्रतिष्ठा-यश मिल सकता पर
तत्त्व का मर्म नहीं।।

---

मात्र शोभा यात्रा निकालने,
भीड़ को अनछना पानी पिलाने,
हल्ला मचाऊ नारे लगाने
बैण्ड बाजों की धुन पर नाचने
महावीर जन्मकल्याणक के अवसर पर
लौकिक कुछ भी आयोजन कर लेने से
समाचार-पत्रों में फोटो व नाम
सामाजिक संगठनों से इनाम
तो मिल जायेंगे
पर अहिंसा, अपरिग्रह व वस्तु स्वातंत्र्य को
निरपेक्ष रहकर स्याद्वाद शैली से समझे बिना
महावीर के सिद्धान्तों को जीवन में लाये बिना
हम महावीर से बहुत दूर हो जायेंगे
तब आत्म शान्ति कैसे पायेंगे?

Created by Universal Document Converter

# संकल्प

जिसने जन्म लिया दुनिया में, उसको एक दिन मरना है।
मरने से पहले पर सोचो! बंधु! कुछ तो करना है।।

वृक्ष मधुर फल, शीतल छाया, देकर करता है उपकार।
रवि प्रकाश दे तम हरता है, नहीं चाहता कुछ सहकार।।
चंद्र चंद्रिका शुभ्र बिछाकर, करता शीतलता का दान।
सरिता जल दे, पुष्प सुरभि दे कभी नहीं करते हैं मान।।
जग हितकर यह कार्य सदा हों, नहीं प्रदूषण करना है।।1।।

मात-पिता ने लालन-पालन, कर कीना है बहु उपकार ।
दादा-दादी नाना-नानी, सबने खूब लुटाया प्यार।।
अपनी उन्नति में समाज अरु संस्थाओं का भी सहयोग।
शिक्षा-औषधि और सुरक्षा में शासन का है विनियोग।।
चुका सकें उपकार सभी का, इनकी सेवा करना है।।2।।

सत्साहित्य सृजन कर मुनिजन, सत्य पंथ है बतलाया।
मधुर सुभाषित वचनामृत दे, गुरुजन ने वह समझाया।।
मोह विनाशक, ज्ञान प्रकाशक, ज्ञान का दीप जलाया है।
तन-मन-धन, स्नेह दान कर, यह प्रकाश फैलाया है।।
हो निरपेक्ष भाव ही मन में, सत्यपंथ पर चलना है।।3।।

दुर्लभ नर भव में हे बंधु ! करो प्रकृति का संरक्षण।
प्रकृति सुरक्षित रही यदि तो, होगा अपना ही रक्षण।।
परिजन-पुर जन अरु समाज का, मानो जो है अनुशासन ।
कर्तव्यों का पालन करना, कहता जो भारत शासन।।
धर्म की चर्चा हर घर में हो, ज्ञान प्रचार ही करना है।।4।।

Created by Universal Document Converter

# निर्भय अरु निर्भार रहो

सूर्य कहे यदि कमल खिलाता, तो क्यों सब ना खिलते हैं?
गुरु कहे मैं शिष्य पढ़ाता, तो क्यों सब ना पढ़ते हैं?

पालन पोषण किया है मैंने, मात-पिता यह कहते हैं।
कोई स्वस्थ पुत्र होता है, रोगी भी तो रहते हैं।।

माँ कहती मैं रोटी बनाऊँ, सभी एक सी ना बनती।
बॉलर बॉल फेंकता है पर, कोई निशाने पर लगती।।

हम कुछ कहना चाहें पर ना शब्द निकलते मनचाहे।
गायक गाना चाहे पर ना, गीत गा सके मनचाहे।।

आज्ञा में जिसे रखना चाहें, वही अवज्ञा करता है।
था कुपुत्र नजरों में सब की, सेवा फिर वही करता है।।

धन-पद पाने भागा फिरता, पर कुछ हाथ नहीं आता।
बिना परिश्रम भी कोई जन, क्षण में सब कुछ पा जाता।।

हिलना-डुलना, आना-जाना, कुछ ना होता मनमाना।
होना है जो जब जैसे भी, जैसा भगवन ने जाना।।

भगवन भी ना कुछ करते हैं, मात्र जानते रहते हैं ।
निज कर्मोदय से सब होता, भगवन ही यह कहते हैं।।

निज भावों से कर्म बंध हो, कर्मोदय में फल मिलता।
कर्मोदय से जीना-मरना, दुख-सुख सुमन स्वयं खिलता।।

अतः तजो प्रिय पर की आशा, कर्तापन भी त्याग करो।
ज्ञातापना सहज स्वीकारो, निर्भय अरु निर्भार रहो।।

*30-04-22*

Created by Universal Document Converter

# लक्ष्य उसे ही मिलता है

बिना रुके अरु बिना थके जो, नित प्रति बढ़ता रहता है।
भले दूर हो लक्ष्य मगर, चलने वाले को मिलता है।।

आलस सबसे बड़ा शत्रु है, मित्र! इसे ना अपनाना।
अहंकार भी रिपु ही समझो, नहीं पास इसके जाना।।
तज कर आलस गर्व भाव जो, धीरे धीरे चलता है।।1।।

शक्ति निज पहचानो पहले, फिर तुम अपना कदम बढ़ाना।
देखा-देखी और दिखावे के चक्कर ना पड़ जाना।।
निज शक्ति अनुसार चले जो, लक्ष्य उसे ही मिलता है।।2।।

असफलता से ना घबराना, बाधाओं से जा टकराना।
हिम्मत-होश हमेशा रखना, न अनीति पथ पर जाना।।
न्याय-नीति पर जो चलता है, सुख उसको ही मिलता है।।3।।

पद-पैसा सब मिले भाग्य से, बात नहीं यह बिसराना।
फिर भी नित पुरुषार्थ करो अरु, अहंभाव ना मन लाना।।
न हताश न हो निराश जो, लक्ष्य उसी को मिलता है।।4।।

धन-पद-यश न मात्र लक्ष्य हो, लक्ष्य हो निज पर हित करना।
ज्ञानदीप द्योतित कर अंतर, जग का मोह तिमिर हरना।।
मिथ्यातिमिर मिटाता वह जो, ज्ञानदीप बन जलता है।।5।।

*16-05-22*

नाग तजे केंचुल भले, विष को तजता नाहिं।
द्रव्यलिंग धारण करे, आशक्ति उर मांहिं।।16।।

Created by Universal Document Converter

# सच में 'मैं तो ज्ञाता हूँ'

जग कहता उद्योग करूँ मैं, और करूँ विध-विध व्यापार।
यह सब तो बस कथन मात्र है, सच में मैं तो ज्ञाता हूँ।।
विद्यालय में पाठ पढाता, छात्रों का करता उद्धार।
कहना हो जो चाहे कह लो, सच में मैं तो ज्ञाता हूँ।।
ज्ञायक के अच्छे हो गायक, अरु तुम धर्म प्रभावक हो।
श्रोता दर्शक कुछ भी माने, सच में मैं तो ज्ञाता हूँ।।
पुत्र-पति अरु पिता कहो, या दादा-नाना जामाता।
कहने के सब नाते-रिश्ते, सच में मैं तो ज्ञाता हूँ।।
विविध संघ संचालक तुम हो, करते हो तुम सुखद 'प्रयास'।
प्रीति दिखाते सब जन कहते, सच में मैं तो ज्ञाता हूँ।।
पढ़ा-लिखाकर बेटा-बेटी, तुमने योग्य बनाये हैं।
निमित्त देखकर जग जन कहते, सच में मैं तो ज्ञाता हूँ।।
ख्यातिप्राप्त तुम बने चिकित्सक, कितने रोग मिटाये हैं।
होने योग्य हुआ है बंधु, सच में मैं तो ज्ञाता हूँ।।
कितने भवन-सड़क बनवाईं, अभियन्ता तुम हो मजबूत।
ये सब पुद्गल की रचना है, सच में मैं तो ज्ञाता हूँ।।
रसमय रुचिकर पकवानों को, श्रम से करती तुम तैयार।
गंध-वर्ण-रस सब जड़ की रचना, सच में मैं तो ज्ञाता हूँ।।
आप आये तो काम हुआ 'यह', शत्रु-मित्र सब कहते हैं।
जो-जब होना पूर्व सुनिश्चित, सच में मैं तो ज्ञाता हूँ।।
'है स्वतंत्र परिणमन जगत का', 'कर्ता' कहता है 'व्यवहार'।
'निश्चय' समझे वह तो कहता, सच में मैं तो 'ज्ञाता' हूँ।।

*24-01-2022*

Created by Universal Document Converter

# आना-जाना

आना-जाना इस दुनिया में, लगा हुआ है लगा रहेगा।
याद करेगी दुनिया उसको, भला रहा जो भला रहेगा।।

जन्म लिया तो जीते ही हैं, सुख-दु:ख जो हो पीते ही हैं।
वस्त्र फटे तो सीते ही हैं, बहुत भरा पर रीते ही हैं।।
याद करेगी दुनिया उसको, सुख-दुख में जो मस्त रहेगा।।

परिजन का सब पालन करते, निज घर तो सब ही हैं भरते।
जोड़-जाड़कर सब ही धरते, छोड़-छाड़कर सब ही मरते।।
याद करेगी दुनिया उसको, परहित में जो दिया करेगा।।

खाना-पीना, सोना-उठना, पढ़ना-लिखना, रोना-हंसना।
भाव शुभाशुभ करते करते, भव समुद्र में जीना-मरना।।
याद करेगी दुनिया उसको, धर्म मार्ग जो चला करेगा।।

क्यों जन्मे हैं? पता नहीं, क्या करना है? पता नहीं।
क्या लाये थे? पता नहीं, कहाँ जायेंगे पता नहीं।।
याद करेगी दुनिया उसको, जिसको यह सब पता रहेगा।।

तन को पोषो, जल जायेगा, धन को जोड़ो, रह जायेगा।
बेटा-बेटी साथ चलें न, एक धर्म ही साथ चलेगा।।
याद करेगी दुनिया उसको, आतमहित जो किया करेगा।।

*01-10-2021*

सुख विषयों का त्याग कर, पुनः करे अभिलाष।
तन शोषण कच लोंच सब, मुनि का व्यर्थ प्रयास।।17।।

Created by Universal Document Converter

# जाने कब क्या हो जाएगा ?

जाने कब क्या हो जाएगा ?
इक पल में क्या खो जाएगा ?
ना मैं जानूँ ना तुम जानो,
यही सत्य है बस मानो।।

मदमाता सा फिरता क्यों है ?
कुछ पाकर इतराता क्यों है ?
जो पाया तूने वर्षों में।
इक पल में खो जाएगा।।

जो भी दुनिया में आया है।
इस जग में जो पाया है।
वह पाया है पुण्योदय से।
पापोदय में बह जाएगा।।

धन बल पर अभिमान करे क्यों।
तन बल की हुंकार भरे क्यों।
तन-धन सब तो मिट्टी ही हैं
सब मिट्टी में मिल जाएगा।।

देखो सूरज प्रातः उगता
मध्य दिवस में तीक्ष्ण तपता,
जग दहकाने वाला सूरज,
संध्या होते ढल जाएगा।।

*16/12/19*

Created by Universal Document Converter

# समकित कमल खिलेगा

कर लो पूजन-प्रवचन कितने, अरु दीप जलाओ तुम घर में ?
समता और सरलता न हो, शान्ति मिले न जीवन में।।
चेहरे पर मुस्कान खिल रही, कपट भरा काले मन में।
रंग-रंगीले पर्व मनाये, द्वेष भरा है अंतर में।।
दीपावलियाँ कितनी बीतीं, फिर भी 'तमस' भरा मन में।।1।।
'जन्म-दिवस' अरु 'वर्षगाँठ' या नया साल जब भी आया।
शुभ सन्देशों के 'विनिमय' में निज-पर मन को 'भरमाया'।।
कितनी शुभकामना मिली पर, अशुभ रहा है जीवन में।।2।।
जिन वचनामृत बरसे छम-छम, फिर भी नीरस है जीवन।
पर्यायों में अपनापन कर, सुनते रहते जिन प्रवचन।।
कितने 'रैन सूट ? हैं पहने, बूँद लगे ना इस तन में।।3।।
'ज्ञायक' और 'अवेदक' कहकर, समझाते जो शुद्ध स्वभाव।
विषयानल में झुलस रहे वे, धन-पद-यश से जिन्हें लगाव।।
कितने 'कर्ता-स्वामी' बनकर, आनंद माने जीवन में।।4।।
दश लक्षण में 'पूजन' 'धारा' और 'बोलियाँ' लगतीं हैं।
काम-क्रोध-मद-लोभ-कपट की, कलुषित नदियाँ बहती हैं।।
कितने दश लक्षण हैं बीते ?, शांति ना आई जीवन में।।5।।
'उत्तम क्षमा' 'मिच्छामि दुक्कडम' ध्वज हमने लहराये हैं।
पर निन्दा में कुशल हुए अरु निज अपराध छुपाये हैं।।
कितनी क्षमावाणियाँ बीतीं ?, क्षमा न आई जीवन में।।6
नहीं हताशा, नहीं निराशा, है किंचित् मेरे मन में।
हो सुदीर्घ-घनघोर निशा पर, सूर्य उगेगा जीवन में।।
समकित कमल खिलेगा निश्चित, मुरझाये इस जीवन में।।7।।

*29/09/21*

Created by Universal Document Converter

# एक युवा आत्मार्थी की भावना

❀

मेरा काम सदा चलना है, न रुकना है न थकना।
जीव मात्र सब ही समान हैं, कौन पराया या अपना?

जाति-पाँति पूजन पद्धति के, भेदभाव न उर को भाते।
हों मतभेद भले हर जन के, पर मनभेद न मन को भाते।।

पंथवाद, एकान्तवाद में, सारा जग है भरमाया।
मैं ही सच्चा, सब जग झूठा, यही मानकर बौराया।।

पंथवाद के आग्रह से ही, जाति-धर्म संकुचित हुआ।
जन-जन का यह जैनधर्म था, सम्प्रदाय में कैद हुआ।।

आओ युवको! जागो! सब मिल, भेदभाव को दूर करें।
वीतरागता अरु सुख पाने, जिनवर का अनुसरण करें।।

'णमोकार' है जिनको प्यारा, वे हों प्राणों से प्यारे।
'देव-शास्त्र-गुरु' पूज्य मानते, वे निज बंधु हैं सारे।।

सकारात्मक सोच हो सबकी, सबके प्रति होवे विश्वास।
वात्सल्य भरपूर सभी में, ज्ञान किरण से होय प्रकाश।।

साधर्मी सब रहें संगठित, नहीं टूटने देंगे हम।
विघटित करने के प्रयास को, सफल न होने देंगे हम।।

हों मतभेद भले जग जन में, फिर भी एक है 'जिन' परिवार।
पूर्ण अहिंसकमय समाज की, शक्ति जाने यह संसार।।

Created by Universal Document Converter

'आतमहित' में जगहित गर्भित, अहंकार का भाव न हो।
सब कुछ मेरा, कुछ न तेरा, छोटे दिल की बात न हो।।

लोकोत्तर या कि जगपथ हो, सदा सत्य का साथ रहे।
पीछे न कोई रह जाये, मन में सबके भाव रहे।।

पुण्योदय से नरतन पाया, जिनवर-जिनश्रुत हैं पाये।
जिनवर के यदि पंथ चले न, विषय-भोग में ही जाये।।

जाना जग को, निज न जाना, व्यर्थ जानना कहलाये।
धन्य वही जो दीपक बनकर, 'निज-पर' को है चमकाये।।

*25/10/18*

# यही संकल्प हमारा है

बीते जीवन के जितने दिन, उतने दिन ना आने वाले।
शुभ्र रहे उनमें से कुछ दिन, शेष रहे सब ही काले।।

शेष रहे जीवन में बंधु! निज-पर हित कुछ काम करूँ।
नव उत्साह व नई उमंग ले, जीवन में संचार भरूँ।।

न कर्तृत्व का भाव जगे उर, कर्तव्य पंथ से नहीं चिगूँ।
यश-अपयश अरु लाभ-हानि में, सत्य पंथ से नहीं डिगूँ।।

बड़े विशुद्धि, प्रगटै शुद्धि, इसी राह पर चलना है।
अन्य कार्य जो भी होते हैं, उनको भी नित करना है।।

देव-शास्त्र-गुरु अर मित्रों का मिलता सदा सहारा है।
नहीं रुके हैं, नहीं रुकेंगे, यह संकल्प हमारा है।।

Created by Universal Document Converter

# मैं सड़कों का राजकुमार

मैं सड़कों का राजकुमार।
सड़कों से ही रखता प्यार।।

सड़क निरन्तर गति देती है।
सड़क तनिक न कुछ लेती है।।
अहर्निशा जागा करती है।
पहुँचाती सबको घर द्वार।।

मंजिल पर जो भी पहुँचे हैं।
सड़कों पर चलकर पहुँचे हैं।।
पर मंजिल पर पहुँच गए जो।
करते नहीं सड़क से प्यार।।

निज-पर हित नव लक्ष्य बनाऊँ।
खुद ही अपनी सड़क बनाऊँ।।
चलूँ दूसरों की सड़कों पर-
मैं वह नहीं हूँ राजकुमार।।

राजा बनना नहीं चाहता।
धकियाना भी नहीं चाहता।।
मंजिल से मुझे धकियाते
उनसे भी मैं करता प्यार।।

भाग्य उसी का सड़क बना जो।
मंजिल पर पहुँचाता सबको।।
लक्ष्य प्राप्त सब जन को लखकर-
मात्र सड़क हँस सकती यार।।

*12-09-22*

Created by Universal Document Converter

# यह भी इक दिन बदल जायेगा।

पापोदय जब जिय का आता।
भूख-प्यास से है चिल्लाता।।
न भरपेट है भोजन पाता।
रोजगार बिन है घबराता।।
रोगों से होता है नाता।
प्रिय परिजन भी है ठुकराता।।
यश चाहे, पर अपयश पाता।
इक क्षण को न दिखती साता।।
अरे मित्र! पर चिन्ता छोड़ो।।
समता से तुम नाता जोड़ो।
यह भी इक दिन बदल जायेगा।।

जब जिय का पुण्योदय आता।
शत्रु भी निज गले लगाता।।
बिना किए ही यश-पद पाता।
रोजगार बढ़ता ही जाता।।
सब बतलाते अपना नाता।
लोहा भी सोना बन जाता।।
जो देखो सिर पर बिठलाता।
स्वागत में माला पहनाता।।
भाग्योदय में न इठलाना।
अहंकार का भाव न लाना।।
यह भी इक दिन बदल जायेगा।।

Created by Universal Document Converter

जो ऊपर जाता वह नीचे आता।
गिरा हुआ भी फिर उठ जाता।।
असफल जन भी सफलता पाता।
पतझड़ हो फिर सावन आता।।
कृष्ण-शुक्ल पक्षों का नाता।
सुख-दुख मिल जीवन कहलाता।।
कर्मोदय से सुख-दुख आता।
नहीं कोई है सुख-दुख दाता।।
निज ज्ञायक से भिन्न है काया।
सत्य समझ लो अवसर आया।।
यह भी इक दिन बदल जायेगा।।

*21/06/23*

## चेतन प्यारे! क्यों करता मनमानी ?

❀

भक्ष्याभक्ष्य विचार नहीं, ना पिये छानकर पानी।
त्रस-थावर का घात करे तू, गिने उन्हें न प्राणी।।
जिन-दर्शन-पूजन ना भक्ति, नहीं दया उर लानी।
निशि भोजन का त्याग करे न, जो जैनत्व निशानी।।
वीतराग प्रभु को न माने, नहीं सुने जिनवाणी।
पर द्रव्यों का कर्ता बनकर, करता तूं नादानी।।
पर्यायों में अपनापन कर, निज निधि है बिसरानी।
जड़ द्रव्यों को अपना माने, जब कि तू है ज्ञानी।।
महाभाग्य जिनधर्म मिला है, अब तज दे मनमानी।
ज्ञानानंद स्वरूप निरखकर, कह मानी जिनवाणी।।

*23/09/18*

Created by Universal Document Converter

# कालचक्र

जो कहते थे 'मेरे बिना पत्ता नहीं हिलता।'
आज वे स्वयं सूखे पत्ते से हिल रहे हैं।।

जो कहते थे 'मेरे इशारे पर नाचती है दुनिया।'
आज वे दुनिया के इशारे पर नाच रहे हैं।।

जो कहते थे 'मेरे दम से लोग खड़े होते हैं।'
वे आज अपने पैरों खड़े नहीं हो पा रहे हैं।।

जो कभी स्वागत-सम्मान से त्रस्त हो जाते थे
आज वे अपमानों के घूंट पिए जा रहे हैं।।

जिनको कभी लगती थी सारी दुनिया अपनी
आज उन्हें कहीं अपने नजर नहीं आ रहे हैं।।

जिनसे लोग कहते थे 'कृपया आप बोलिए'
आज उनसे ही लोग 'चुप रहिये' कह रहे हैं।।

यही है कालचक्र जो सदा चलता रहता है।
काल के प्रवाह में हम सब ही बह रहे हैं।।

काल चक्र समझ, अहंकार तज जो चलता है
उसके जीवन में ही सुख-शान्ति बरस रहे हैं।।

*22-07-23*

सुख तो दो दिन मात्र है, फिर है दुक्ख अपार।
विषय भोग में प्रीति कर, पग न कुल्हाड़ी मार।।18।।

Created by Universal Document Converter

# अन्तर्रोदन

मित्र! मैं कैसे हर्ष मनाऊँ?

अनुशासन ना कहीं है दिखता।
अधिकारों की सबको चिंता।।
छल-छद्मों से ही है नाता।
कहीं ना इक क्षण दिखती साता।।
गत वर्षों से रोग बहुत है।
जन-जन के मन शोक बहुत है।।
कैसे मैं नव-वर्ष मनाऊँ?1।।

देश-प्रदेश व ग्राम नगर में।
गली-गली औ डगर-डगर में।
मौत नाचती है घर-घर में।
चिंता सबको जाऊँ किधर मैं?
शमशानों में भीड़ मची है।
डोली नहीं, दिखे अर्थी है।।
जन्म-दिवस अब कैसे मनाऊँ?2।।

हिल-मिलकर हम साथ रहेंगे।
सबके हित में काम करेंगे।।
जिसने ऐसी 'कसम' थी खाई।
चला गया वह बहन का भाई।।
कहीं पिता, कहीं पुत्र जा रहा।
नववधू तो कहीं पति रो रहा।।
सालगिरह कहो कैसे मनाऊँ?3।।

Created by Universal Document Converter

जो धन जोड़ा पेट काटकर।
चला जा रहा सब दवाई पर।।
धन-पद सब बेमानी लगता।
कहीं कोई ना रक्षक दिखता।।
रो रहा जग को हंसाने वाला।
प्रभु जाने क्या होने वाला?
कैसे घर में खुशियाँ मनाऊँ?

*20-04-2021*

# यह भी बदलेगा

कृष्ण पक्ष में चन्द्र हीन हो, शुक्ल पक्ष वृद्धि पाता।
रात्रि का घनघोर महातम, रवि आते ही भग जाता।।

जब वस्तु संयोग हुआ है, तब वियोग निश्चित होगा।
पापोदय में अपयश पाया, पुण्योदय में यश होगा।।

काल चक्र तो चक्कर खाता, आता है अरु जाता है।
कर्मोदय से आते-जाते, संयोगों से क्या नाता है?

इष्ट कल्पना कर अज्ञानी, व्यर्थ कभी इतराता है।
जब वियोग का अवसर आये थर-थर यह थर्राता है।।

महाभाग्य से जिन श्रुत पाया, जीवन में भी साता है।
परिजन-पुरजन से क्या नाता, मम स्वरूप बस ज्ञाता है।।

*14/03/17*

Created by Universal Document Converter

# मित्रो!

मित्रो!
मुझे धर्म और धर्म प्रभावना से
बहुत ही प्यार है
साधर्मियों को देखकर
मन में आती बहार है
मैं
धर्म प्रचार के लिए
कभी भी, कहीं भी, कुछ भी कर सकता हूँ
आ सकता हूँ जा सकता हूँ
तन मन-धन-लगा सकता हूँ

बशर्ते, उस दिन
सर्दी, गर्मी, बरसात न हो
मोहक सुहानी रात न हो
बच्चों की कक्षा/परीक्षा न हो
पत्नी के बाजार जाने की इच्छा न हो
मित्रों का जन्म दिन, शादी की साल गिरह न हो
घर-परिवार-मुहल्ले में किसी का विरह न हो
व्यापार तेज न मंदा हो
जिस दिन कोई काम काज न धंधा हो
तब ऐसा हो नहीं सकता
आप बुलायें और
हम न आयें?

Created by Universal Document Converter

हम तो दौड़े-दौड़े आयेंगे
क्योंकि
हमें धर्म और धर्म प्रभावना से
बहुत ही प्यार है
तत्व प्रचार करना हमारा अधिकार है।

*05/03/17*

# बाकी है

धन-पद पाने बहुत पढ़ाया, बच्चों को,
निज पद पाने की शिक्षा देना, बाकी है।।

अन्याय-अनीति सहज सीखते हैं जग में,
न्याय-नीति की सबको शिक्षा देना, बाकी है।।

होटल-चौपाटी पर बाल-वृद्ध सब खाते हैं
शुद्ध-सात्त्विक भोज बनाना, बाकी है।।

कलहकारिणी निंद्य-मृषा वच कहते सब।
हित-मित-प्रिय वाणी सिखलाना बाकी है।।

आगे बढ़ते लोगों को, मिल लोग गिराया करते हैं।
गिरे हुए को उठा प्रेम से, गले लगाना बाकी है।।

मन्दिर-गिरि-आश्रम तो बहुत बनाये हैं हमने।
जन-जन के निर्मल उर में, जैनत्व जगाना बाकी है।।

*22-04-22*

Created by Universal Document Converter

# मैं केवल 'ज्ञाता' मानो

जिनवच सुनने और सुनाने 'पुण्योदय' से मिलते हैं ।
जो भवि निज 'पुरुषार्थ' जगाते, जिनवच में वे रमते हैं।।
सुनने और सुनाने में ही, यदि बंधु! जीवन बीता।
निज दर्शन पुरुषार्थ किये बिन सुख घट रहता है रीता।।

निज शुद्धातम में रमना ही, कहलाता जिनवच रमना।
शुद्धातम को भूल बंधु! तुम वचन जाल में ना फँसना।
शुद्धातम को लक्ष्य में लेकर सुनना और सुनाना है।
निज पुरुषार्थ जगाना बंधु! अवसर चूक न जाना है।।

जिनवाणी के सुने बिना ना, कभी सुक्ख पाता प्राणी।
वह भी लक्ष्य भटक जाता है, 'केवल' सुनता जिनवाणी।।
सुनकर 'समझो' और 'समाओ' तभी काम होगा प्यारे।
'केवल' सुनने और सुनाने, वाले तो जीवन हारे।।

उपलक्ष्यों में अटक-भटक कर, चित न लक्ष्य से भटकाओ।
'अच्छे वक्ता-श्रोता' बनकर, 'ज्ञाता' को ना बिसराओ।
पद-पैसा अरु मिले प्रसिद्धि, उसे पुण्य फल तुम जानो।
यश-अपयश के हर प्रसंग में, 'मैं केवल ज्ञाता मानो'।।

उबटन-मर्दन भोज दे, करो बहुत श्रृंगार।
तन दुर्जन सम दगा दे, भूल जात उपकार।।19।।
तन चंचल-निर्गुण- मलिन, यासों तजो सनेह।
निज आतम की रुचि से, पावन होती देह।।20।।

Created by Universal Document Converter

# छोड़ जगत की आश

पीछे मुड़कर मत देखो तुम, नित नूतन कुछ करते जाओ।
सोये थे कल जिस पड़ाव पर, जागो आगे कदम बढ़ाओ।।

बीता समय न वापिस आता, फिर गत की क्यों चिंता करना।
आगत भी तो निरी कल्पना, सोच-सोच कर क्यों दुःख सहना।।

सब खुश हों वह कार्य कभी भी, चक्रवर्ती भी नहीं कर सके।
करें सभी स्वीकार बात वह, तीर्थंकर भी नहीं कह सके।।

फिर कैसा 'अभिमान' करो तुम, बात हमारी सब ही माने।
क्यों झूठा तुम करो गुमान कि, सारा जग तुमको पहचाने।।

'शान्ति' से यदि रहना चाहो, छोड़ो सारे जग की आशा।
आशा-पाश तोड़कर बंधु!, निर्वांछक हो लखो 'तमाशा'।।

'आश' यदि जीवित है मन में, हो जाओगे सबके दासा।
दास बनेगा सारा ही जग, यदि नाशी दुखदायी आशा।।

आशा से अपयश ही होता, आशा से होता अपमान।
आशा से होता तनाव है, आशा ही तो दुःख की खान।।

रह निरपेक्ष स्व-पर हित बंधु, कार्य सदा ही करते रहना।
करने का 'कर्तृत्व' त्याग कर, निज 'कर्तव्य' सदा ही करना।।

यश-अपयश की चिंता न कर, यह सब तो हैं भाग्याधीन।
हैं स्वतंत्र सब द्रव्य सदा ही, परिणति उनकी है स्वाधीन।।

'गज' विचरण करते जब जग में, बहुजन सम्मुख रहें खड़े।
'श्वान' भोंकते रहते दौड़ें, गज के पीछे रहें पड़े।।

Created by Universal Document Converter

गज तो शान्तभाव से चलता, 'श्वान ध्वनि' पर क्यों दे ध्यान?
जग की निंदा से निष्पृह रह, विज्ञ सदा रहते गतिमान।।

अतः मित्र तुम सावधान हो, निज-पर हित कुछ काम करो।
निर्भय अरु निरपेक्ष सदा रह, मानव तन को सफल करो।।

*26/08/19*

# मन करता है कुछ कर जाऊँ

मन करता है कुछ कर जाऊँ,
रोतों को मैं दिल से हंसाऊँ।।

मोहितिमिर फैला है चहुं दिशि।
ज्ञान ज्योति से उसे भगाऊँ।।

पुण्य उदय से प्राप्त हुआ धन।
इच्छुक जन के बीच लुटाऊँ।।

गुरुप्रसाद से ज्ञान मिला जो।
घर-घर जाकर उसे पढ़ाऊँ।।

मोह नींद में सोये हैं जो।
वात्सल्य से उन्हें जगाऊँ।।

कर्तापन का भाव रहे ना।
ज्ञाता बन यह भाव जगाऊँ।।

*04/09/18*

Created by Universal Document Converter

# जीवन की सार्थकता

अगणित जीव जन्म लेकर यहाँ, रोते और रुलाते हैं।
धन्य वही प्राणी है जग में, जो हँसते और हँसाते हैं।।

तत्त्वज्ञान बिन समता ना हो, समता बिन ना मिले खुशी।
राग-द्वेष जो करते रहते, उनके मुख पर नहीं हंसी।।

सब जीवों से साम्य भाव रख, भेद नहीं देखो कुछ भी।
कोई न चाहे दुखमय जीवन, नित सुख चाहें जीव सभी।।

विविध वर्ण के वस्त्रों से ज्यों, मनुज ना होते विविध प्रकार।
तन-धन के संयोगों से त्यों, जीव न होते विविध प्रकार।।

वस्त्रों से ज्यों मनुज भिन्न है, त्यों तन से है चेतन भिन्न।
पर से भिन्न सदा ही रहता, गुण पर्यय से सदा अभिन्न।।

अनगिन जन्म लिए पर चेतन, तन से भिन्न नहीं देखा।
इसीलिए तो बंधु! अब तक, मिटी नहीं दुखमय रेखा।।

*14/12/19*

मूल अरु उत्तर गुण रहित, जो साधु हो जाय।
कपि ज्यों चूके डाल से, त्यों मुनि बहु दुख पाय।।21।।
विष-विषधर-अग्नि भली, भला विपिन का वास।
मिथ्यादृष्टि निकृष्ट अति, रहो ना उसके पास।।22।।
जिन वच श्रवण किया नहीं, किया ना तत्व विचार।
चौरासी लख योनि में, भ्रमण किया बहु बार।।23।।
केवलज्ञान स्वभावमय, नित्य निरंजन रूप।
तन से क्यों अनुराग है? हे चेतन चिद्रूप।।24।।

Created by Universal Document Converter

# क्रमबद्ध

❀

जो, जिसमें, जब, जैसे होना, प्रभु ने सब ही देखा है।
होगा कौन निमित्त वहाँ पर, सबका लेखा-जोखा है।।

कहें, सुनेंगे, जानेंगे सब, मानेंगे पर विरले ही।
परिवर्तन की वांछा से ही, रहें अज्ञजन सदा दुखी।।
होते हुये कार्य को जानो, न परिवर्तन चाह करो।
सत्य समझकर स्वीकृत करना ही सच्चा पुरुषार्थ अहो।।

है प्रत्येक द्रव्य अरु गुण का, कार्य पूर्णतः निश्चित ही।
समवायों की निश्चितता ही, क्रमनियमित-क्रमबद्ध कही।।
अपने सोचे, किये न होता, तब फिर क्यों आकुलता हो।
निर्भय अरु निर्भार रहो तुम, ज्ञाता हो ज्ञाता ही रहो।।

अचलित वस्तु व्यवस्था है यह, वीर प्रभु ने जानी है।
सुखमय जीवन वही है जीता, जिसने इसको मानी है।।
कर्तापन का मान गलित हो, जो करता स्वीकार है।
वीतराग-सर्वज्ञ प्रभु को, वंदन शत-शत बार है।।

*23/02/17*

सकल शास्त्र ज्ञाता मुनि, यदि ना निज का भान।
कर्म बंध करता रहे, सुख ना मिले यह जान।।25।।
तत्त्वज्ञान से रहित हो, जिय माने विपरीत।
कर्मज भाव ही स्व लगें, अज्ञ जनों की रीत।।26।।
गौर-श्याम वर्णादियुत, निज को तू मत मान।
पीन अरु कृश तन रूप है, ऐसा ही तू जान।।27।।

Created by Universal Document Converter

# चलने से ही मंजिल मिलती

चलने से ही मंजिल मिलती, करने से ही होते काम।
रहता है गतिमान सदा जो, उसका ही होता है नाम।।

कछुआ चलता धीरे-धीरे, पर मंजिल पा जाता है।
सोता है खरगोश इसलिए, वह पीछे रह जाता है।।

घड़ी सदा ही चलती रहती, अतः कलाई पर बँधती।
गाड़ी चलती रहकर ही तो जग की सैर सदा करती।।

नन्ही सी चींटी भी चलकर, दीवारें चढ़ जाती है।
हिमगिरि से चलकर के गंगा, सिंधु तक बह जाती है।।

गिरिराज अकड़ कर खड़ा रहा, न एक कदम बढ़ पाया है।
सरवर में पानी बँधकर, हा! पड़ा, सड़ा पछताया है।।

अतः मित्र तुम चलो निरन्तर, पद चाल भले ही धीरे हो।
पड़े रहे तो पत्थर हो, चल पड़े तुम्ही तो 'हीरे' हो।।

*16/11/19*

न तुम पण्डित मूर्ख हो, न ईश्वर न नरेश।
न तुम गुरु न शिष्य हो, ये सब कर्म विशेष।।28।।
न तुम सेवक स्वामी हो, ना कारण न कार्य।
कायर- वीर ना उच्च है, नीच न कर स्वीकार्य।।29।।
तुम एक चेतन भाव हो, नहीं पुण्य ना पाप।
धर्माधर्म शरीर बिन, नहिं अकाश न काल।।30।।
रंगहीन चिद् रूप है, ना कृश है न थूल।
गौर-श्याम जड़ रूप हैं, इनमें निज न भूल।।31।।

Created by Universal Document Converter

# हे प्रिय चेतन!

हे प्रिय चेतन अब तुम जागो, सोते रहे अनादि से।
निजानंद का स्वाद लिया न, क्यों तुम बने प्रमादी से।।

अपनी मति को अब गति दो तुम, पर से हट निज में आओ।
पर-पर्यय का मोह तजो और निज चेतन की रुचि लाओ।।

मोह नींद में पड़े हुए हो, तुम अनादि मिथ्यातम में।
यदि चलना प्रारंभ किया तो, क्षण में होगे 'शिव-मग' में।।

चलने से ही पंचम-सप्तम गुणथान तेरवां भी होगा।
चौदहवें को पार करोगे, सुखमय अनंत शिव पद होगा।।

पर से हटना निज में रमना ही तो बंधु! 'चलना' है।
'ज्ञाता' रहना कुछ ना करना, यही मात्र बस 'करना' है।।

*16-11-19*

न मैं क्षत्रिय शूद्र हूँ, ब्राह्मण-वैश्य न रूप।
स्त्री पुरुष नपुंस नहीं, मैं चेतन चिद् भूप।।32।।

बाल-युवा मैं वृद्ध हूँ, क्षपणक पंडित वीर।
श्वेतांबर वंदक हूँ मैं, मत चिंतन कर धीर।।33।।

तन का जर अरु मरण लख, मत हो तू भयभीत।
अजर-अमर पर ब्रह्म ही, निज मानो हे मीत।।34।।

जरा-मरण रोगदियुत, काय है चित्र-विचित्र।
स्त्री पुरुष लिंगादि भी, तन ही जानो मित्र।।35।।

Created by Universal Document Converter

# अप्रभावित रहूँ

घुट-घुट कर जन जीवन जीते, हँस-हँसकर जीना चाहूँ।
आयु पूर्ण होने से पहले, कभी नहीं मरना चाहूँ।।

धन-हानि, पद-नाश हुआ तो, सब छुप-छुप कर रोते हैं।
अवसादों-चिन्ता-तनाव में, दुर्लभ नर भव खोते हैं।।
धन-पद आदि नश जाने से, मैं निर्भार हुआ मानूँ।।1।।

पत्नी-पुत्र साथ न देते, रो-रो कर सब कहते हैं।
ठुकते-पिटते फिर भी मोही, घर में घुसकर रहते हैं।।
मैं एकत्व भावना भाकर, हूँ स्वतंत्र ऐसा जानूँ।।2।।

टी बी, कैंसर, ब्लड प्रेशर के, भय से भागे फिरते हैं।
कोरोना को रोको ना, बस यही प्रार्थना करते हैं।।
मैं तो रोग रहित, तन विरहित, 'अजर- अमर' हूँ यह गाऊँ।।3।।

पुण्योदय में जो हँसते हैं, पापोदय में रोते हैं।
आर्त-रौद्रमय भावों को कर, जीवन व्यर्थ ही खोते हैं।।
यश-अपयश अरु लाभ-हानि से, भिन्न हूँ 'ज्ञायक' मैं ध्याऊँ।।4।।

*17/07/2020*

## कटूक्ति

या तो मैं तेरी मानूँ, या तो तुम मेरी मानो।
साथ में चलने का, मित्रो यह ही इक नुस्खा है जानो।।
यदि दोनों ने नहीं मानने की ठानी है तो प्यारे-
साथ छोड़कर अपना अलग-अलग रस्ता जानो।।

Created by Universal Document Converter

# यदि हम

हम
भव भय नाशक जिनवाणी
पढ़ाते तो हैं, पर
पढ़ते नहीं हैं।

हम
सबको सुखदायक तत्त्वज्ञान
समझाते तो हैं, पर
समझते नहीं हैं।

हम
वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु की
पूजन करना सिखाते तो हैं, पर
स्वयं करते नहीं हैं।

हम
आत्महित के मार्ग पर
सबको चलाते तो हैं, पर
चलते नहीं हैं।

हम
अनंत संसार के भय से
सबको डराते तो हैं, पर
डरते नहीं हैं।

Created by Universal Document Converter

तो हम
धर्म/सुख के मार्ग पर
सबको बढ़ाते तो हैं, पर
स्वयं बढ़ते नहीं हैं।

*25/6/16*

# जीतना है महाभारत

लक्ष्य उन्नत ले चलें तो, सफलता निश्चित मिलेगी।
उपलक्ष्य में यदि मन भ्रमाया, तो सफलता ना मिलेगी।।

मार्ग में यदि शूल हों तो, नहीं तुम पग डगमगाओ।
पंथ में यदि फूल हों सौंदर्य लख चित न चलाओ।।

भव्य 'आयोजन' भले हो, पर प्रयोजन भूलना मत।
करके 'प्रदर्शन' भव्यता का, आत्मदर्शन भूलना मत।।

'ध्रुव फंड' की ही मुख्यता में, ध्रुव दृष्टि को ना भूलना।
लक्ष्य हो निर्वाण का 'निर्माण' में ना फूलना।।

पूर्णता का लक्ष्य लेकर, निडर हो पग तुम बढ़ाओ।
पद-प्रशंसा अरु प्रसिद्धि में नहीं चित् को भ्रमाओ।।

जीतना है महाभारत, लघु लड़ाई हार जाना।
हार में हिम्मत न हारो, लक्ष्य हो भव पार जाना।।

*26-10-21*

Created by Universal Document Converter

# करते हैं राज

करते हैं राज जग में वे ही सदा।
कह सकें जो 'यह भी सही वह भी सही।।'

जलता रहे सद्ज्ञान दीपक नित्य ही।
गर मेरे द्वारा न सही, तो तेरे द्वारा ही सही।।

काम निकले जब तक, कि जिससे
वह जो भी करे, होता है सब सही।।

काम निकला, अब कर दो बाहर।
भले वह कर रहा हो, सब सही।।

मुझको मैं ही सही लगता सदा
जबकि सच ये है कि वह भी सही।।

तुम बदल लो यह सोच मन की
जो मैं कहूँ है बस वह ही सही।।

उतरूँ शिखर से मान के मैं
बस कह सकूँ मैं सच को सही।।

*27-06-23*

जरा-मरण रोगादि अरु, लिंग वर्ण का वास।
हे आत्मन्! तुझ में नहीं, इनसे हो तू उदास।।36।।

कर्म जनित रागादि को, यदि माने निज भाव।
शिव सुख प्राप्त न हो सके, मिले जगत भटकाव।।37।।

Created by Universal Document Converter

# खुशियाँ मनाओ

खुशियाँ मनाओ, निर्भार हो गया।

वचन सुने वीर के
धीर महावीर के
नाशक भव पीर के
खुशियाँ मनाओ; मुक्ति द्वार मिल गया।।1।।

एकत्व टूटा चाम से
ममत्व टूटा 'धाम' से
कर्तृत्व छूटा 'काम' से
खुशियाँ मनाओ, निर्भार हो गया।।2।।

ज्ञायक संयोग का
ज्ञायक वियोग का
ज्ञायक हूँ लोक का
खुशियाँ मनाओ, जाननहार हो गया।।3।।

चाह नहीं भोग की
आह! नहीं रोग की
राह मिली मोक्ष की
खुशियाँ मनाओ, भव पार हो गया।।4।।

*04-07-23*

ज्ञानमयी निज आत्म से, अन्य हैं जो परभाव।
उन सब को तुम छोड़कर, ध्याओ शुद्ध स्वभाव।।38।।

Created by Universal Document Converter

# समझा था जिनको बच्चा

समझा था जिनको बच्चा,
वे कहते हम जवान हो गए।।

मालिक थे जिस मकां के,
उसमें ही मेहमान हो गए।।

अ-आ की खबर है नहीं,
पर वे ही कद्रदान हो गए।।

जीते थे जिन्हें देख-देखकर
वे अब मौत के सामान हो गए।।

वात्सल्य भरे 'घर' थे जो कभी
स्वारथ भरे 'मकान' हो गए।।

जो लोभ में भटकते इधर-उधर
वे तो धोबी के श्वान हो गए।।

आगे-पीछे घूमते थे जो कभी।
वे ही अब हमारे दीवान हो गए।।

*24-07-23*

राग-रंग से रहित है, ज्ञानानंद स्वभाव।
सत्य निरंजन शिव वही, ध्याओ हे चिद् राव।।39।।

त्रिभुवन में जिन देव हैं, जिनवर में त्रैलोक।
भेद नहीं जिन-लोक में, सादर करूँ मैं धोक।।40।।

Created by Universal Document Converter

# यदि चाहते

यदि चाहते गुलाब सा महकना
तो कांटों के संग रहना होगा।।

यदि चाहते हीरा सा चमकना,
तो कटना और छिलना होगा।।

यदि चाहते मोती सा दमकना,
तो कांटे से छिदना-भिदना होगा।।

यदि चाहते खुद की खुजली मिटाना,
तो नाखूनों के घाव सहना होगा।।

यदि चाहते जग में कुछ काम करना,
तो अपयश के वचनों को सुनना होगा।।

नहीं चाहते अपशब्दों को सुनना,
तो चादर ओढ़कर सोना होगा।।

*04/03/18*

## कटूक्ति

साथ चलेंगे यह कहकर, पहले दिन सब चलते हैं।
अब सब मेरे साथ चलो, चलते-चलते कहते हैं।।
मंजिल जब दिखती पास तभी, कहते मेरे पीछे आओ।
मैं लाया सबको मंजिल पर, मंजिल आने पर कहते हैं।।

Created by Universal Document Converter

# शुभकामना

हे प्रियवर! तुम मम हितकर हो।
करो कामना, जो सुखकर हो।।

जन्म दिवस तो अज्ञ मनाते।
गत अपराधों का फल पाते।।
ज्ञानीजन तो हैं शर्माते।
खुशी मान न पाप कमाते।।
क्या बधाइयाँ, क्या बलिहारी,
जो जीवन भर ही दुःखकर हो।।1।।

'मंगल परिणय' क्या सच मंगल।
सब जन लखते हर पग किलकिल।।
सुख शान्ति बरसेगी छल-छल।
आशा रहती प्रतिदिन प्रतिपल।।
बीत गये कितने बसन्त पर,
दिन न आया जो सुखकर हो।।2।।

जन्म हुआ था रोते रोते।
जीवन बीता रोते रोते।।
मंगल परिणय में है बंधन।
फूल गया जो, भूला चिद् घन।।
निज को भूल जो पर में अटका।
अटकन-भटकन कैसे सुखकर हो ?3।।

Created by Universal Document Converter

नरतन पाकर धर्म करे जो।
गठबंधन कर शिवपंथ चले जो।।
परिजन पाकर न धर्म भुलाते।
धन-पद पाकर न इठलाते।।
पंक मध्य ज्यों पंकज रहते।
तब उनका जीवन सुखकर हो।।4।।

धर्म पंथ पर चलूँ चलाऊँ।
निज-पर हितकर कार्य कराऊँ।।
पापों में न जीवन बीते,
अंतर सुख घट रहें न रीते।।
हे प्रियवर! अब करो कामना,
जन्म व परिणय न दुःखकर हो।।5।।

*24-06-2021*

## तुमने...

तुमने जो फेंके पत्थर, मुझको बुरा समझ के।
मैंने मकां बनाया अहसां तेरा समझ के।।

तुमने मकां गिराया, दर-दर भटकने मुझको।
मैं चल पड़ा सफर में, भारत भ्रमण समझ के।।

तुम पुण्य धर्म हेतु करते हो दान जग में।
लिखते हो नाम ऐसे, मन्दिर बने हो खुद के।।

संस्था समाज परिजन माने हुकम को तेरे।
नाचीज हो जहाँ में, बैठे खुदा हो बनके।।

Created by Universal Document Converter

# दीप

चतुर्दिक फैला तिमिर है, ज्ञान रवि ही अस्त है।
शान्ति पथ दिखता नहीं है, हर पथिक यहाँ त्रस्त है।।

उठो प्यारे! दीप बन, द्योतित करो इस जगत को।
पथ प्रकाशक बन बढ़ो, रोको तिमिर के कदम को।।

है नहीं 'दिनकर' अभी, यह सोच दिल से तुम हटाओ।
प्रज्वलित हो, एक गृह का, तुम तिमिर भयकर मिटाओ।।

तिमिर हरना इस जगत का, अति प्रशस्त ही कार्य है।
'स्नेह' पूरित सदा जलना, दीप को स्वीकार्य है।।

एक दीपक जगत भर का, तिमिर हर सकता नहीं है।
है पता, पर दीप जहँ, वहाँ तिमिर रह सकता नहीं है।।

दीप से फिर और दीपक हर नगर-घर में जलाओ।
हर सदन में जला दीपक, इस तिमिर को सब हराओ।।

दीप बनना हर किसी के, भाग्य में होता नहीं है।
वही रोशन कर सका जो, अहर्निश सोता नहीं है।।

अय मित्र! यदि तुम स्वयं ही, दीप बन सकते नहीं हो।
तो हथेली से छुपाकर, दीप रक्षा के लिए सन्नद्ध ही हो।।

हे दीप! तुम चिंतन करो मत, तिमिर में क्यों याद करते?
पथभ्रष्ट जन पथ दीप्त करने, पथ प्रदर्शक ही बुलाते।।

Created by Universal Document Converter

यश तुम्हारा होगा जगत में, आना-जाना तो लगा है।
याद करते लोग उसको, दीप बनकर जो जला है।।

जो तिमिरहर दीप बनकर, शान्ति पथ उद्योत करता।
आयु क्षय होवे भले ही, पर नहीं वह जग में मरता।।

हे प्रभो! इक भावना है, एक दीपक मैं जलाऊँ।
या स्वयं ही दीप बनकर, तिमिर अंतस् का मिटाऊँ।।

*16-07-2021*

# याचना

उठ, चलूँ अब लक्ष्य तक मैं, संग की न चाहना।
साथ यदि कोई चले तो, हो नहीं दुर्भावना।।

स्व-पर हित नूतन करूँ कुछ, बस यही है कामना।
क्रोध-मद जागृत न हो, करबद्ध प्रभु से याचना।।

जितनी अरु जैसी सफलता, हो मुझे संतोष है।
कार्य सिद्धि यदि नहीं तो, मात्र मेरा दोष है।।

सावधानी नित रहे, जिनपथ विमुख होऊँ न कभी।
जिनधर्म पाकर आओ मित्रो! खुशियाँ मनायें नित सभी।।

*20/09/19*

Created by Universal Document Converter

# क्या से क्या, सब हो गये ?

कौन कब आकर कहाँ से ? पंछी बैठा डाल पर।
मेहमान सम उन पंछियों को, माना हमारे हो गये।।

रात-दिन तो जो हमारे, कष्ट के कारण बने थे।
मोह मदिरा के नशे में, वे ही प्यारे हो गये।।

छीन कर घरबार जिसने, बेसहारा कर दिया।
बैठकर सिर पर हमारे, अब सहारे हो गये।।

धन-रूप-पद था पास मेरे, तब सभी मेरे ही थे,
भाग्य पलटा, बिखरा वैभव, अपने पराये हो गये।।

स्वार्थ सिद्धि के लिए ही, रिश्ते बनते सब यहाँ।
समय ही पर पता चलता, क्या से क्या सब हो गये।।

*12/12/2019*

## हाइकू

ध्रुव-अचल
अनुपम दशा है
सिद्धायतन
---
मंगलमय
मंगलकरण है
मंगलायतन

चलते चलो
अनवरत चलो
होओ अचल
---
सबका साथ
मन में इक आस
यही प्रयास

Created by Universal Document Converter

# जाग-जाग मतिवन्त रे

जाग-जाग मतिवन्त रे।
कर निद्रा का अंत रे।।

मोह नींद में सब जग लूटे।
जगने पर ही इनसे छूटे।।
कोई यहाँ ना कंत रे।।1।।

दीन हीन है निज को माना।
जबकि तू चैतन्य खजाना।।
तुझ में गुण हैं अनन्त रे।।2।।

कोई नहीं सुख-दुख का दाता।
जग में है ना इक क्षण साता।।
कहते गुरु निर्ग्रंथ रे।।3।।

सिद्ध समान ही तू है आतम।
निज को ध्या तू बन परमातम।।
कहते श्री भगवन्त रे।।4।।

*26-08-21*

## मुक्तक

लक्ष्य दूर है यही सोचकर, हार मान जो रह जाते।
सर्व सुलभ साधन पाकर भी, असफलता ही वे पाते।।
धीरे-धीरे कदम बढ़ाते, न डरते जो विघ्न-भयों से।
हिम्मत कर जो आगे बढ़ते, वही सफलता हैं पाते।।

Created by Universal Document Converter

# संवर अधिकार सार

जल में मल न, मल में जल न, मल मल अरु जल जल ही है।
मल जल में रहकर जल न हो, तब तो जल निर्मल ही है।।

राग द्वेष मय परिणति जब हो, तब भी ज्ञानी ज्ञानी है।
ज्ञान भाव का तिरस्कार कर, रागी माने मानी है।।

राग ज्ञान मय न होता है, ना ही आतम रागी है।
राग, ज्ञान को भिन्न जानता, वह ही तो गतरागी है।।

ज्ञान भाव अरु शुद्ध भाव की महिमा जब भी आती है।
परिणति में तब आये शुद्धता, और अशुचिता जाती है।।

राग ज्ञान की एकत्व बुद्धि, जिय को बंध कराती है।
भेदज्ञान की ज्योति जगे जो, मुक्ति तक पहुंचाती है।।

स्वर्ण तप्त होने पर भी ज्यों, स्वर्ण स्वर्णता नहीं तजता।
राग द्वेष के संग रहे पर, ज्ञानी ज्ञानी ही रहता।।

भेदज्ञान कर त्रिविध कर्म से, निज में ही अब आ जाओ।
भेदज्ञान से संवर करके, निर्जर मुक्ति भी पाओ।।

भेदज्ञान से सिद्ध हुये थे, हो रहे हैं अरु होयेंगे।
आत्मोपलब्धि भेदज्ञान से, भेदज्ञान बिन रोयेंगे।।

भेदज्ञान की अविचल ज्योति, रहे प्रकाशित मम उर में।
निज आतम संग करूँ रमण में, रहूँ शाश्वत निजपुर में।।

*30/03/17*

Created by Universal Document Converter

# चेतन की भूल...

सब द्रव्य निज में रहते, पर में न आते-जाते।
चेतन की भूल भारी, बैठा है स्वामी बनके।।

चेतन स्वभाव ज्ञाता, निरपेक्ष रहकर जाने।
ज्ञेयों से हो प्रभावित, भव बीते दुख सहते।।

होता है कार्य खुद से, दूजा न कोई कर्ता।
इक जीव ही है ऐसा, रहता है कर्ता बनके।।

पर का जो स्वामी बनता, या पर का कर्ता बनता।
है मान्यता ये दुखमय, मिथ्यात्व इसको कहते।।

कर्म का उदय हो, या क्षय-क्षयोपशम हो।
इन सबसे भिन्न रहता, ज्ञाता स्वभाव रहके।।

पर्याय शुद्धाशुद्ध हो, गुणभेद की हो चर्चा।
केवल अभेद आतम, निज में रहो तुम जमके।।

*04/04/18*

## मुक्तक

सुख के लिए दु:खी ही रहना, स्वार्थसिद्धि हित मृषा वचन।
धन पाने को परिजन तजना, जो हैं अपने भाई-बहन।।
शक्ति से भी बाहर जाकर जो जन धन व्यय करते हैं।
यह सब नर का 'पागलपन' है, अरे विज्ञजन कहते हैं।।

Created by Universal Document Converter

# मेरा काम सदा चलना है

मेरा काम सदा चलना है।

एक जगह पर ठहर गया जो।
मंजिल से रह गया, दूर वो।।
कदम लघु हों, पर चलना है।।1।।

बहा नहीं जल, सड़ जाएगा।
अश्व चला न अड़ जाएगा।।
रहूँ अकेला; पर चलना है।।2।।

मिले सफलता तो सब आते।
असफल होने पर धकियाते।।
मुझे नहीं पर को लखना है।।3।।

दुनिया की है रीत निराली।
ऊपर उजली भीतर काली।।
इस दुनिया से बच चलना है।।4।।

मेरा काम सदा चलना है।

*29-04-22*

जिन कहते हे आत्मन्! जानो आतमराम।
तन अरु चेतन भिन्न हैं, अब जग से क्या काम?।।41।।
जिन वंदन व्यवहार है, निज वंदन परमार्थ।
शुद्धातम वंदन हुआ, पर वंदन है व्यर्थ।।42।।

Created by Universal Document Converter

# प्रेम भरी सब बोलो बोली

प्रेम भरी सब बोलो बोली।
बोलो लगे न ज्यों हो गोली।।
सत्य-प्रेम की हो रंगोली।
रिश्तों में शर्करा हो घोली।।

साथ चलें हम बनाके टोली।
कोई न दुश्मन, हैं हमजोली।।
है विश्वास वहीं, सुख रौली।
छल छद्मों की कीचड़ धोली।।

याद करो न बीती बोली।
बात हुई जो वह तो हो ली।।
बात करो तो सच से तोली।
सत्य सुधा भर बोलो बोली।।

बीती रात को याद करो ना।
दु:खमय घात को याद करो ना।।
बात-घात जो होना हो ली।
सबको सुखकर बोलो बोली।।

*09/03/2020*

जिमि बंधन को छोड़कर, उष्ट्र चरे बहु घास।
मुक्ति रमा से लगा मन, जग की करे ना आस।।43 ।।

Created by Universal Document Converter

# जो जाना वह होना है

क्या ? कब ? कैसे ? होना है ?
जीना है अरु मरना है।
लाभ-हानि अरु यश-अपयश
होता न अनहोना है।।

व्रत-पूजन उपवास करो-
हाथ जोड़ अर पाँव पड़ो
होगा वही जो होना है,
वीतराग ने जाना है।।

ज्ञानी निशदिन हैं समझाते
बड़े भाग्य से अवसर आते
अज्ञ कभी न माना है।
भवदुख ही बस पाना है।।

धन्य वही जो माना है-
चार गति नहीं जाना है
आकुलता नहीं पाना है।
सिद्ध पुरी में जाना है।।

विषयेन्द्रिय सब वश करो, तजो सभी दुराचार।
इक रसना इक पर स्त्री, दो पर तुरत प्रहार।।44।।

इंद्रिय बलद न वश किये, निज कानन न प्रवेश।
निज अरु पर के ज्ञान बिन, क्या साधु का वेश ?।।45।।

Created by Universal Document Converter

# चलो किनारा करते हैं

जग दिखलाता अपनापन है।
बिन आतम के केवल तन है।
स्वारथ के सब सगे यहाँ पर
सब अपने में ही रहते हैं।
चलो किनारा करते हैं।।1।।

धन पद यश पाने के खातिर
लोग न जीते जीवन जी भर।
और और की ही चिंता में
नृप अरु रंक सभी रहते हैं।
चलो किनारा करते हैं।।2।।

पर हित हेतु जीवन बीता।
नहीं भरा वह, मैं भी रीता।।
तुम अपने में, मैं अपने में
आओ अब हम रहते हैं।।
चलो किनारा करते हैं।।3।।

*12/10/17*

हे सखी! प्रियतम फंस गए, पंच इंद्रिय के पाश।
दुर्जन संग जो मिल गया, नहीं मिलन की आस।।46।।

हो यह मन एकाग्र जब, तब समझे जिन बैन।
तज अचित्त चेतन लखे, तब पावत है चैन।।47।।

Created by Universal Document Converter

# न जानते

चाहते सब नाम जग में, नाम खुद न जानते।
काम नित ही मैं करूँ, पर काम क्या? न जानते।।

सौख्य पाने दौड़ते हैं, सत्य सुख जाने बिना।
दुख मिटाना चाहते हैं, दुख निमित्त जाने बिना।।

अपना उनको मानते, जो होंगे अपने ना कभी।
सुख सरोवर भूलकर, सुखकर लगे तन-धन सभी।।

बाग समझे राग को, जो आग सम जलता सदा।
राग का है राग जब तक, सुख नहीं मिलता कदा।।

नाम ज्ञायक, काम जानन, सुख अनाकुलता कहा।
मैं अरागी राग तजकर, गुण अनंत लहूँ अहा।।

*9-5-22*

# नीति-सुधा

आग लगाकर शीतलता की, चाह व्यर्थ ही होती है।
राग आग में जो जलता है, उसे मुक्ति नहीं होती है।।

निज निवास में रहने पर ही, मिलता है हमको आराम।
त्यों ही निज में वास करे जब, चेतन पाता है विश्राम।।

पर प्रदत्त सुख भी दु:ख ही है, सभी विज्ञ जन कहते हैं।
विषयज संयोगज सुख-दुख है, ज्ञानी जन यों कहते हैं।।

*17-03-17*

Created by Universal Document Converter

# कामना शुभकामना

कामना शुभकामना, हार्दिक शुभकामना।
जन्मदिन की है बधाई, हार्दिक शुभकामना।।

जिनधर्म पाया है अमोलक, ना रहे कोई याचना।
जिन दर्श पूजन हो सदा, जीवन में होवे पाप ना।।

हे भविक! तुमको ना हो, लौकिक सुखों की चाहना।
स्वस्थ और प्रसन्न रह तुम, करो सुखमय साधना।।

न्याय नीति पर चलो तुम, हो कभी अन्याय ना।
सुखमय रहो सुखमय करो, है जन्मदिन पर कामना।।

# सवैया

पंचम काल महा विकराल,
खडो मुंह फाड़ मोय सूझत नाहिं।

राग की आग में तप्त सभी जन,
पाप को बंध करें जग मांहि।।

विषयों के वश होय रहे सब,
हित-अनहित कछू सूझत नाहिं।।

धन्य मुनीश्वर आत्म विलासी,
नित्य निरंजन रूप लखाहिं।।

*8/2/17*

Created by Universal Document Converter

# सकारात्मक होना चाहिए!!

मैं भी
पॉजेटिव होना चाहता हूँ
दूसरों/समाज के
दोष नहीं
गुण ही
कृष्ण पक्ष नहीं
शुक्ल पक्ष ही
देखना चाहता हूँ।
किसी के दोष बताकर
उसे कष्ट नहीं देना चाहता हूँ
कमियाँ बताकर
निंदक नहीं कहलाना चाहता हूँ
विद्यमान/अविद्यमान
गुण गानकर
सबका मित्र बनना चाहता हूँ।

पर मन कहता है
क्या यह सही होगा?
साबुन के क्षार गुण बिना
मैल कैसे धुलेगा?
इंजेक्शन की सुई की चुभन बिना
नीरोग कैसे होगा?

Created by Universal Document Converter

फोड़े के ऑप्रेशन बिना
चैन कैसे मिलेगा ?

जिस विचार/वचन का उद्देश्य
पर निंदा
पर का अपमान न हो
वह विचार/वचन
मेरी दृष्टि में
निगेटिव नहीं हो सकते।
और
आपकी दृष्टि में ?

*17/03/18*

## जिद

❀

तुम्हारी जिद है
मेरी इच्छा के विरुद्ध
सड़ने/गलने/बीमार पड़ने
व कमजोर होने की
तो हमारी भी
अब जिद है
तुम्हें
सड़ते/गलते/बीमार पड़ते हुए
देख देखकर भी
अपने में मस्त रहने की।

*20/03/18*

Created by Universal Document Converter

# सत्य के निकट

❀

मेरा मित्र है अजितकुमार
कहता मुझसे - 'राजकुमार!
बिस्तर बाँध रखो तैयार।।'

जग के सारे रिश्ते-नाते
स्वार्थ सधे तक सबको भाते।
निकला काम सभी धकियाते
हाथ जोड़ो, पर न बतियाते।।
झूठे जग से चल दो यार।।1।।

गोरा-सुघड़ सलोना ये तन।
तीखी चितवन, चंचल ये मन।।
खूब खिलाओ, खूब सम्हारो।
चाहे इस पर जीवन वारो।।
फिर भी साथ न जाये यार।।2।।

पाप कमाकर जोड़ रखो धन।
धन के खातिर छोड़े परिजन।।
धन को पाकर इतना फूले।
धरम-करम अरु शरम को भूले।।
हो क्षण भर में बंटा ढार।।3।।

बनते हो जिनवच के वक्ता।
लोग समझते केवल बकता।।
किसकी कौन यहाँ है सुनता।
अपनी धुन में ही सब धुनता।।
चुप रहकर कर तत्त्व विचार।।4

*04-07-22*

Created by Universal Document Converter

# अब हम कहीं ना जाएंगे

क्षणिक क्षुद्र दुखमय भव धर कर।
कीट-पतंग-सर्प-सिंह बन कर।।
नर-नारक-सुरगति धर-धर कर
भटके चहुँगति वेश बदलकर।।
कष्ट सहे हैं अब तक अगणित।
दशा मिली न सुख से सुरभित।।
भरत भूमि मानव तन पाया।
देव-शास्त्र-गुरु लख हर्षाया।।
जिनपथ अब चल जायेंगे।।1।।

निज महिमा सुन प्रमुदित है मन।
अशरीरी, ज्ञायक मैं चेतन।।
रंग-राग से भिन्न निराला।
न मैं गोरा, न मैं काला।।
सिद्ध समान सदा पद मेरा।
ध्रुव स्वभाव मैं करूँ बसेरा।।
भेदज्ञान का अवसर आया।
अचलित चेतन भाव सुहाया।।
बाहर न भरमायेंगे।।2।।

धन-पद-यश-अपयश जो भी है।
सुन्दर तन-मन सब जड़ ही है।।
इनमें अपनेपन की बुद्धि।
चेतन में नित करे अशुद्धि।।

Created by Universal Document Converter

जड़ तज अब चेतन को निरखूँ।
विषयभोग तज निज सुख परखूँ।।
सुख-दुख में प्रभु अब समता हो।
सुर सुख की भी न ममता हो।।
निज शाश्वत सुख पायेंगे।

*06-07-22*

## मुक्तक

विघ्न भयों से ना घबराना, हिम्मत कर बढ़ते जाना।
कदम रुके ना, शीश झुके ना, हो चाहे विपरीत जमाना।।
डरना तो मरना है बंधु! निर्भय होकर कदम बढ़ाओ।
धीर-वीर हो नित ही चलना, है तुमको इतिहास बनाना।।

---

देश-प्रदेश-नगर-मंदिर सब शुद्धातम में असद्भूत हैं।
धन-दौलत और परिजन-पुरजन चेतन तुझसे असद्भूत हैं।।
ज्ञान-दरश निज वैभव भूला, सुख पाने को उनको जोड़ा।
सुख न पाया, दुःख ही पाया, सुख के साधन असद्भूत हैं।।

---

उद्यम से ही कार्य सिद्ध हों, नहीं सोचने से होते।
कर पर जो कर धरकर बैठे, व्यर्थ समय है वे खोते।।
राजा हो या रंक जगत में, जो भी आलस करते हैं।
असफल होकर बैठे रहते, जीवनभर वे हैं रोते।।

---

Created by Universal Document Converter

# छोटी सी भावना

आए जो भी सभी जा रहे, मैं भी एक दिन जाऊँगा।
इस जग से जाने से पहले, कुछ नूतन कर जाऊँगा।।

खाना-पीना और खेलना, ये तो सब ही करते हैं।
निज-पर हित कुछ करने हेतु, मैं इक अलख जगाऊँगा।।

जो सी ए, डॉक्टर, इंजीनियर, या कि कलेक्टर बनने वाले।
वे भी तत्त्वज्ञान को पायें, धारा नयी बहाऊँगा।।

तत्त्वज्ञान हो युवा हृदय में, जीवन में हो जैनाचार।
इस प्रयास में ही मित्रों का, धन-श्रम-समय लगाऊँगा।।

# थामकर के हाथ जिनका

थामकर के हाथ जिनका, था कभी चलना सिखाया।
वे ही बच्चे मुझसे कहते, आपको चलना न आता।।

वर्णमाला पूरी सिखा, अज्ञान हर ज्ञानी बनाया।
वे ही मुझसे अब ये कहते, आपको पढ़ना न आता।।

मैंने पसीना को बहा, जलधार मरुथल में बहाई।
प्यासा रख जन मुझसे कहते, जलपान करना तुमको न आता।।

रेत-पत्थर जोड़कर था, एक सुन्दर घर बनाया।
करके बेघर मुझसे कहते, घर में रहना तुमको न आता।।

*26-12-22*

Created by Universal Document Converter

# मन के दोहे

मन की बात मन में रखो, कहते हैं सब लोग।
पर मन की जो मन रखे, उसे होत कई रोग।।1।।
कलुषित मन से जो करें, कटु वच नित्य प्रयोग।
मन की बात मन में रखो, उनसे कहते लोग।।2।।
'नम' कर जो मन की कहें, सुनते हैं सब लोग।
हितकर उनके वचन सुन, भगते मन के रोग।।3।।
'अकलमन्द मैं एक ही', माने बहुते लोग।
सबको मूरख समझना, यही मानसिक रोग।।4।।
निज-पर हितकर भावना, मन में लाओ भाइ।
मन की बात खुलकर कहो, हो सबको सुखदाइ।।5।।
हित-मित-प्रिय वच बोलकर, करना एक प्रयोग।
मन की मन में मत रखो, सभी कहेंगे लोग।।6।।
मन को चंचल मत करो, चंचल मन दुख देत।
चंचलता मन की मिटे, आकुलता हर लेत।।7।।
मन में नित प्रमुदित रहो, दुख न बाँटे कोइ।
सुख-दुख खुद ही भोगना, भोगो हँस या रोइ।।8।।
मन में विषय-कषाय है, तन से करता जाप।
दिखता है पुण्यात्मा, करता सच में पाप।।9।।
जहँ जिय की सुखबुद्धि है, मन भागे उस ओर।
मन तो एक पतंग है, 'रुचि' है उसकी डोर।।10।।
आतम की जब रुचि लगे, तब मन भी उस ओर।
विषयों की मन रुचि तजे, तब आया भव छोर।।11।।

*27-12-22*

Created by Universal Document Converter

# तत्त्वविचार

दुर्लभ नर भव पाकर चेतन किया न तूने तत्त्व विचार।
तू है कौन? कहाँ से आया? कैसे चलता यह व्यापार?
गोरा, काला, शरीर मिला क्यों ? क्यों पाया ऐसा परिवार।
कोई सुन्दर, कोई असुन्दर, दुःख-सुख का ना पारावार।।

सभी चाहते नित प्रति सुख हैं, पर सुख को वे नहीं पाते।
अजर-अमर मैं रहूँ सदा ही, पर इक क्षण में मर जाते।
मोही होकर जिनको पोषे, वे देते हैं साथ नहीं।
करे परिश्रम दिवस-निशि तू, पर लगता कुछ हाथ नहीं।।

यश चाहे पर अपयश मिलता, स्वास्थ चहे पर होवे रोग।
माल भरा है गोदामों में, कर नहीं पावे उनका भोग।
तेरे करने से कुछ हो तो, करले तू इक काला बाल।
बाल भी काला कर ना पाये, अब तो बदलो अपनी चाल।।

होते हुए काम को जानो, कुछ भी नहीं तेरे आधीन।
तेरे वश से कुछ नहीं होता, होता है सब कर्माधीन।
तू है चेतन, तन है अचेतन, है स्वतंत्र सारा परिवार।
हो स्वतंत्र परिणमन सभी का, कर लो चेतन तत्त्व विचार।।

अधिकारी अधीनस्थ को निज सम नहीं बना पाते हैं।
अच्छे वक्ता भी श्रोता को कहाँ वक्ता बना पाते हैं।।
यह तो जिनेन्द्र भगवान की ही महानता है दोस्तो-
जो अपने भक्तों को जिनेन्द्र बनने का मार्ग बता जाते हैं।।

Created by Universal Document Converter

# संत स्वभाव निराला

नाना वस्त्राभूषण धरकर, भी हमने दु:ख पाये हैं।
नग्न दिगम्बर संत हमारे, देखो सुख में नहाये हैं।।
बार-बार हम भोजन करते, तो भी तृप्त नहीं होते।
नीरस-सरस, मिले न मिले, मुनिवर व्यग्र नहीं होते।।
हम रहते हैं ए.सी. में पर, विषय-कषायों से हैं तप्त।
मुनिवर रहते वन-जंगल में, निजानंद में रहते मस्त।।
मान-प्रतिष्ठा अरु धन-पद के पीछे हैं हम भाग रहे।
मुनिवर तो इन सबको तजकर, बस निज में ही जाग रहे।।
निज वैभव को भूल स्वयं हम, जड़ वैभव पाना चाहें।
धन्य-धन्य गुरुराज हमारे, जड़ तज चिद् वैभव पायें।।
मात-पिता अरु भाई बन्धु, पत्नी पुत्र लगे परिवार।
गुरुवर उनसे मोह तजा है, गुण अनंत जिनका परिवार।।
हम कहते सर्दी-गर्मी में, क्या करते मुनि बेचारे?
मुनिवर तो निज वैभव भोगें, भोगी लगते बेचारे।।
बाहर का है माल खजाना, भीतर से हैं हम कंगाल।
यतिवर के है पास न तिल तुष, फिर भी वे हैं मालामाल।।
जड़ दृष्टि को छोड़ो भाई, चेतन से नाता जोड़ो।
विषय-कषायों में न सुख है, इनसे अब मुँह को मोड़ो।।
है स्वाधीन सहज अरु सुखमय, मुनिराजों का ही जीवन।
उनको निज आदर्श बनाओ, विषयों में फिर लगे न मन।।
देते हैं संदेश मौन रह, हो जाओ भव्यो! स्वाधीन।
सुख-शांति वे कभी न पाते, जो रहते पर के आधीन।।
किया 'समर्पण' दर्श-ज्ञान का, जैसे निज में मुनिवर ने।
वंदना करके उन मुनिवर को, मैं भी रम जाऊँ निज में।।

Created by Universal Document Converter

## लेखक द्वारा लिखित प्रकाशित साहित्य

₹ 25/-

₹ 15/-

₹ 15/-

₹ 5/-

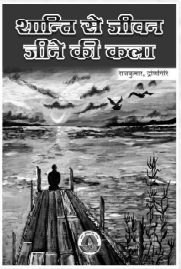


₹ 35/-

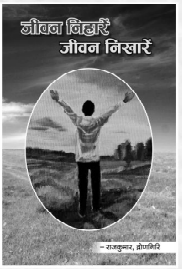


₹ 20/-

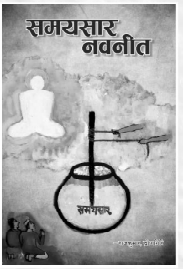


₹ 20/-

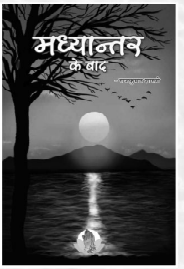


₹ 50/-

₹ 30/-

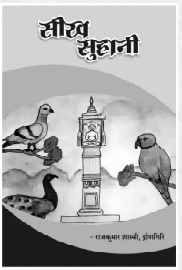


₹ 30/-

₹ 30/-

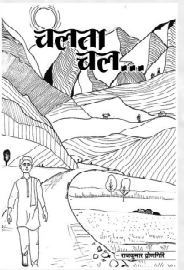


₹ 50/-

Created by Universal Document Converter

# लेखक का अप्रकाशित साहित्य

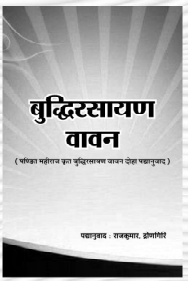

# संस्कार सुधा मासिक के विशेषांक

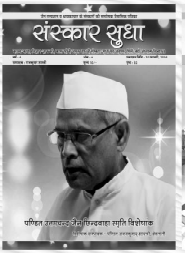


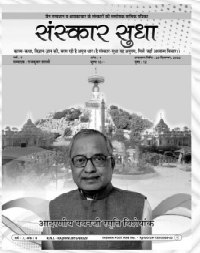

Created by Universal Document Converter